# गिद्ध गणना रिपोर्ट 2025

वन विभाग
मध्यप्रदेश शासन

वन विभाग
मध्यप्रदेश शासन

# गिद्ध गणना रिपोर्ट 2025

Van Vihar National Park & Zoo, Bhopal

MP TIGER FOUNDATION SOCIETY
रक्षति व्याघ्र: स: प्रकृतिं

**असीम श्रीवास्तव (भा.व.से)**
प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख
मध्य प्रदेश शासन वन विभाग

# संदेश

गिद्ध प्रकृति के सबसे कुशल सफाईकर्मी के रूप में कार्य करके पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पिछले दशकों में इनकी घटती संख्या मध्य प्रदेश सहित पूरे देश में गंभीर चिंता का विषय रही है। इसे देखते हुए, वन विभाग ने इन महत्वपूर्ण पक्षी प्रजातियों की निगरानी और संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास किए हैं।

**गिद्ध गणना रिपोर्ट 2025**, साक्ष्य–आधारित संरक्षण और दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का परिणाम है। यह रिपोर्ट न केवल वर्तमान संख्या के आँकड़े प्रस्तुत करती है, बल्कि मध्य प्रदेश में प्रजातियों के रुझान, क्षेत्रीय वितरण, घोंसले के रिकॉर्ड और मौसमी विविधताओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी भी प्रदान करती है। ये आँकड़े हमारी संरक्षण रणनीतियों की सफलताओं और उन क्षेत्रों पर प्रकाश डालते हैं जिन पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने और कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

मैं उन सभी क्षेत्रीय अधिकारियों, कर्मचारियों और सहयोगियों की सराहना करता हूँ जिन्होंने समर्पण और वैज्ञानिक दृढ़ता के साथ इस विशाल सर्वेक्षण को सफल बनाया। उनके प्रयासों ने भारत में किए गए सबसे व्यापक गिद्ध संख्या आकलनों में से एक में योगदान दिया है।

यह रिपोर्ट लक्षित संरक्षण प्रयासों की योजना बनाने और संवेदनशील भू–भागों में एक महत्वपूर्ण मानक के रूप में काम करेगी। मुझे विश्वास है कि यह पहल वन्यजीव संरक्षण में मध्य प्रदेश की अग्रणी स्थिति को और सुदृढ़ करेगी।

**असीम श्रीवास्तव (भा.व.से)**
प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख
मध्य प्रदेश शासन वन विभाग

**शुभरंजन सेन (भा.व.से)**
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एवं मुख्य वन्यजीव अभिरक्षक
मध्य प्रदेश शासन वन विभाग

# प्रस्तावना

गिद्ध एक प्रमुख प्रजाति है जिसकी उपस्थिति एक स्वस्थ और क्रियाशील पारिस्थितिकी तंत्र का प्रतीक है। मध्य प्रदेश, अपने समृद्ध वन परिदृश्य और विविध वन्यजीवों के साथ, ऐतिहासिक रूप से कई गिद्ध प्रजातियों का गढ़ रहा है। हालाँकि, हाल के दशकों में हुई भारी गिरावट ने केंद्रित संरक्षण कार्रवाई की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

**गिद्ध गणना रिपोर्ट 2025,** वन्यजीव निगरानी के प्रति हमारे व्यवस्थित दृष्टिकोण और लुप्तप्राय प्रजातियों के पुनरुद्धार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। शीतकाल और ग्रीष्मकाल दोनों गणना के दौरान सभी वन क्षेत्रों से एकत्रित व्यापक आँकड़े राज्य में गिद्धों की वर्तमान स्थिति की सटीक तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

उत्साहजनक रूप से, सर्वेक्षण के निष्कर्ष, गिद्धों की आबादी में विशेष रूप से लंबी चोंच वाले, सफेद पीठ  वाले और सफ़ेद गिद्धों की लगातार वृद्धि दर्शाते हैं। घोंसले के रिकॉर्ड में वृद्धि प्रमुख आवासों में प्रजनन आबादी की संभावित बहाली का भी संकेत देती है। हालाँकि, कुछ क्षेत्रों में गिद्धों का लगभग अभाव और लाल सिर वाले गिद्ध जैसी गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों की निरंतर कम संख्या हमें याद दिलाती है कि अभी बहुत काम किया जाना बाकी है।

मैं इस महत्वपूर्ण कार्य में योगदान देने वाले क्षेत्रीय कर्मचारियों, शोधकर्ताओं और अधिकारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। उनका समर्पण यह सुनिश्चित करता है कि प्रबंधन संबंधी निर्णय ठोस विज्ञान और क्षेत्रीय वास्तविकताओं द्वारा निर्देशित हों।

हमें आशा है कि यह रिपोर्ट मध्य प्रदेश और उसके बाहर गिद्धों के भविष्य को सुरक्षित करने के उद्देश्य से भविष्य के संरक्षण प्रयासों और नीति–निर्माण के लिए एक संदर्भ दस्तावेज़ बनेगी।

**शुभरंजन सेन (भा.व.से)**
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एवं मुख्य वन्यजीव अभिरक्षक
मध्य प्रदेश शासन वन विभाग

**विजय कुमार (भा.व.से)**
संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एवं चिड़ियाघर

# आभार

मैं, मध्य प्रदेश के सभी वन कर्मचारियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनके अथक प्रयासों से गिद्ध गणना एक व्यापक और सफल अभ्यास बन पाया। सभी वन वृत्तों के नोडल अधिकारियों, वनमण्डलाधिकारियो (डीएफओ), उप–वनमण्डलाधिकारियो (एसडीओ), रेंज अधिकारियों और समर्पित कर्मचारियों का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने इस राज्यव्यापी अभ्यास के दौरान योजना, समन्वय, डेटा संग्रह और रिपोर्टिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हम उन गैर–सरकारी संगठनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने वर्षों से मध्य प्रदेश में गिद्ध संरक्षण में सहयोग दिया है।

हम उन मास्टर प्रशिक्षकों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए और राज्य भर में सर्वेक्षण टीमों को क्षेत्रीय मार्गदर्शन प्रदान किया। सर्वेक्षण की वैज्ञानिक अखंडता और मानकीकृत निष्पादन सुनिश्चित करने में उनकी प्रतिबद्धता और विशेषज्ञता अमूल्य रही है। मैं, श्री दिलशेर खान, श्री मोहनदास नागवानी, मोहम्मद खालिक, श्री प्रमित अग्रवाल, श्री डी पी श्रीवास्तव, श्रीमती संगीता केवट, सुश्री. संगीता राजगीर, श्री तेजस करमरकर, श्री विजय बी. नंदवंशी, श्री विकास यादव, श्री अजिंक्य देशमुख, श्री अनिमेष चव्हाण के योगदान के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

अंत में, हम उन सभी स्वयंसेवकों का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने विभिन्न भू–दृश्यों में, अक्सर चुनौतीपूर्ण क्षेत्रीय परिस्थितियों में, सर्वेक्षण में भाग लिया। उनका समर्पण और उत्साह भारत में गिद्ध संरक्षण के प्रति समाज की सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

**विजय कुमार (भा.व.से)**
संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एवं
चिड़ियाघर

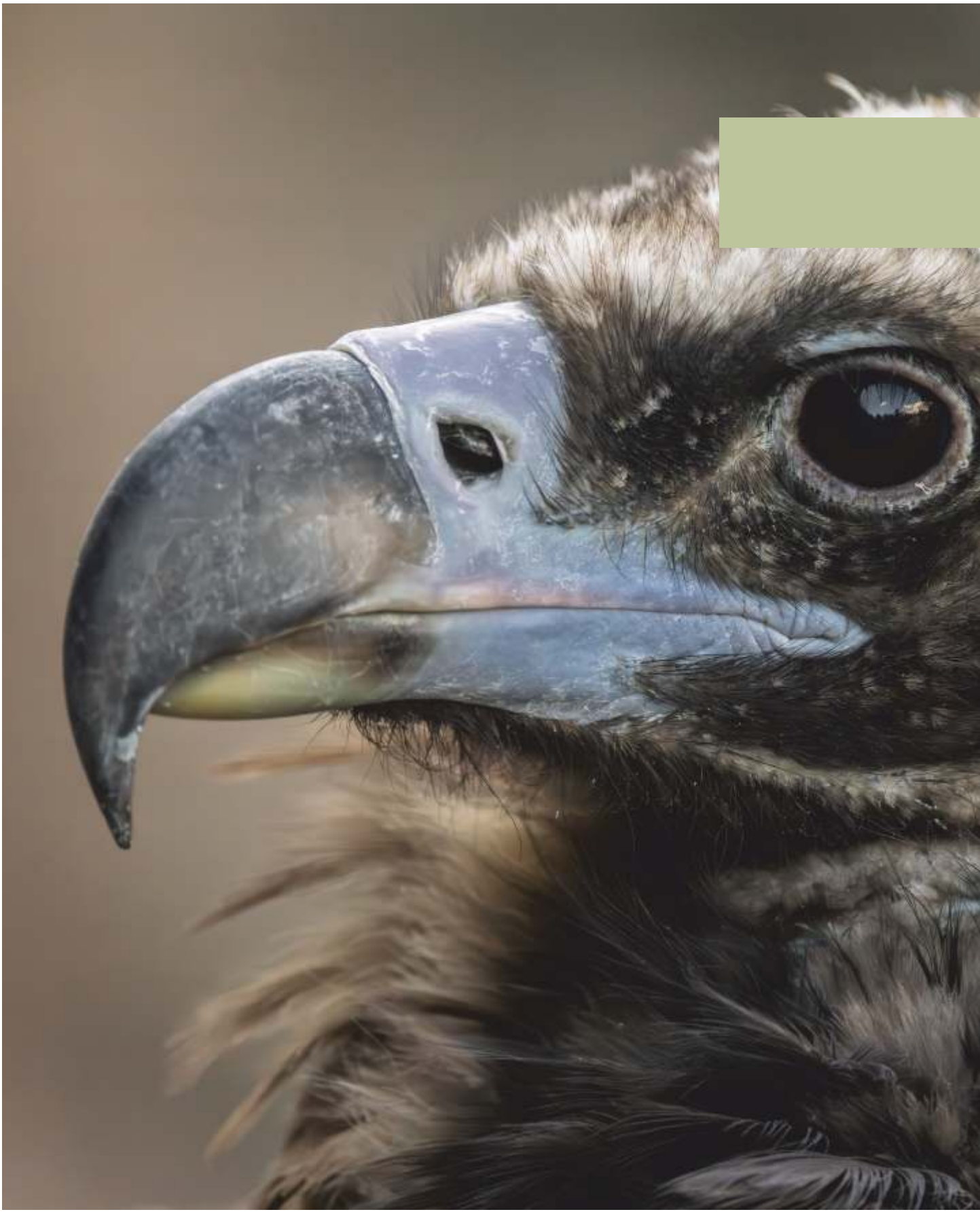

# Content

| अध्याय | शीर्षक | |
|---|---|---|
| | मध्यप्रदेश मे गिद्धों की प्रजातियाँ | 01 |
| | सारांश | 02 |
| | क्या आप जानते हैं ? | 04 |
| 1 | परिचय | 05 |
| | 1.1 गिद्धों का महत्व और गिद्धों की संख्या में गिरावट की पृष्ठभूमि | 06 |
| | 1.2 गद्धों की संरक्षण स्थिति | 07 |
| | 1.3 भारत में गिद्ध प्रजातियाँ | 07 |
| | 1.4 वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या का अनुमान | 07 |
| 2 | सर्वेक्षण श्रेत्र | 09 |
| 3 | कार्यप्रणाली | 11 |
| | 3.1 संभावित स्थलों की पहचान | 13 |
| | 3.2 कौशल निर्माण | 13 |
| | 3.3 क्षेत्र सर्वेक्षण और आँकड़ा संग्रहण | 14 |
| 4 | परिणाम | 15 |
| | 4.1 प्रजाति विविधता | 16 |
| | 4.2 गिद्धों की स्थिति | 16 |
| | 4.3 राज्य में गिद्धों की अनुमानित संख्या | 16 |
| | 4.4 मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या प्रवृति | 25 |
| | 4.5 विभिन्न संरक्षित क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या | 26 |
| | 4.6 मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या का अवलोकन | 27 |
| | 4.7 गिद्धों के प्रजाति–वार घोंसले | 28 |
| 5 | ग्रीष्म ऋतु में गिद्धों की गणना | 29 |
| | 5.1 ग्रीष्म गणना 2025 में गिद्धों की प्रजातिवार संख्या | 30 |
| 6 | आवासीय दृष्टि से गिद्ध संख्या | 31 |
| 7 | निष्कर्ष | 33 |
| | अनुलग्नक | 35 |

# मध्यप्रदेश मे गिद्धों की प्रजातियाँ

लंबी चोंच वाला गिद्ध

सफ़ेद पीठ वाला गिद्ध

सफ़ेद गिद्ध,

लाल सिर वाला गिद्ध

हिमालयन ग्रिफ़ॉन

यूरेशियन ग्रिफ़ॉन

सिनेरियस गिद्ध

# मध्यप्रदेश मे गिद्धों की प्रजातियाँ

| क्रम संख्या | स्थानीय नाम | इंग्लिश नाम | संक्षिप्त नाम | वैज्ञानिक नाम | प्रवृति |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | देशी गिद्ध, भारतीय गिद्ध, लंबी चोंच वाला गिद्ध | Long-billed Vulture | LBV | *Gyps indicus* | निवासी |
| 2 | सफ़ेद पीठ गिद्ध | White-rumped Vulture, White-backed Vulture | WRV | *Gyps bengalensis* | निवासी |
| 3 | सफ़ेद गिद्ध, इजिप्शियन वल्चर, मिस्री गिद्ध | Egyptian Vulture | EV | *Neophron percnopterus* | निवासी / प्रवासी |
| 4 | लाल सिर वाला गिद्ध, राजगिद्ध | Red-headed Vulture | RHV | *Sacrogyps calvus* | निवासी |
| 5 | हिमालयन ग्रिफ़ॉन | Himalayan Griffon | HG | *Gyps himalyensis* | प्रवासी |
| 6 | यूरेशियन ग्रिफ़ॉन | Eurasian Griffon | EG | *Gyps fulvus* | प्रवासी |
| 7 | सिनेरियस गिद्ध, कलागिद्ध | Cinereous Vulture | CV | *Aegypius monachus* | प्रवासी |

# सारांश

गिद्ध गणना रिपोर्ट 2025, मध्य प्रदेश में गिद्धों के राज्यव्यापी सर्वेक्षण के निष्कर्ष प्रस्तुत करती है, जो शीतकाल और ग्रीष्मकाल दोनों में किया गया था। यह रिपोर्ट गिद्धों की संख्या में वृद्धि के उत्साहजनक रुझानों को दर्शाती है, साथ ही प्रमुख चुनौतियों और संरक्षण प्राथमिकताओं की भी पहचान करती है।

2025 की शीतकाल गणना के दौरान कुल 12,710 गिद्ध दर्ज किए गए, जो 2016 में दर्ज 6,999 गिद्धों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है, जो नौ वर्षों में 82% से अधिक की वृद्धि है। 2025 की ग्रीष्मकाल गणना में 9,509 गिद्ध दर्ज किए गए, जो केवल स्थानीय प्रजातियों पर केंद्रित थे। ये परिणाम मध्य प्रदेश को भारत में गिद्धों के सबसे महत्वपूर्ण आवासों में से एक के रूप में उजागर करते हैं, जहाँ कई संरक्षित क्षेत्र और वनमंडल पर्याप्त संख्या में गिद्धों का समर्थन करते हैं। सर्वेक्षण के दौरान भारत में पाई जाने वाली नौ गिद्ध प्रजातियों में से सात दर्ज की गईं, जिनमें सबसे प्रचुर मात्रा में लंबी चोंच वाला गिद्ध (LBV) शामिल है, जिसकी 2025 की सर्दियों में 6,904 संख्या पाई गई। सफ़ेद गिद्ध (EV) की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और यह 2,984 तक पहुंच गई है। सफेद पीठ वाले गिद्ध (WRV) की आबादी बढ़कर 2,236 हो गई है। अन्य में लाल सिर वाला गिद्ध (RHV) 132, हिमालयन ग्रिफ़ॉन (HG) 130, यूरेशियन ग्रिफ़ॉन (EG) 194 और सिनेरियस गिद्ध (CV) 76 शामिल हैं। उल्लेखनीय रूप से, लंबी चोंच वाले गिद्ध के घोंसले बनाने की संख्या भी सबसे अधिक (1,521) पाई गई, जो एक स्थिर और प्रजनन करने वाली आबादी का संकेत देती है। हालांकि, केवल 9 घोंसलों और 132 के साथ लाल सिर वाले गिद्धों की संख्या गंभीर रूप से कम बनी हुई है और उन्हें केंद्रित संरक्षण हस्तक्षेप की आवश्यकता है। संरक्षित क्षेत्रों में, वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व (817), पन्ना टाइगर रिजर्व (691), और रातापानी टाइगर रिजर्व (549) में गिद्धों की सबसे बड़ी आबादी पाई गई। बैतूल और खंडवा वनवृत्त में कोई गिद्ध दर्ज नहीं किया गया, जिससे इन क्षेत्रों में लक्षित बहाली और निगरानी की आवश्यकता का सुझाव मिलता है। रिपोर्ट में आवास प्रकारों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें गिद्धों को सबसे अधिक चट्टानों, पेड़ों, जल निकायों और भोजन स्थलों के पास दर्ज किया गया है। प्रजातियों का वितरण मौसम के अनुसार अलग–अलग होता है, जो हिमालयी और यूरेशियन ग्रिफ़ॉन जैसे कुछ गिद्धों के प्रवासी व्यवहार को दर्शाता है।

तालिका 1 : गिद्ध संख्या शीतकाल और ग्रीष्मकाल

| वनवृत्त का नाम | शीतकालीन गणना 2025 | ग्रीष्मकालीन गणना 2025 |
|---|---|---|
| बैतूल | 0 | 0 |
| खंडवा | 0 | 0 |
| बालाघाट | 16 | 0 |
| इंदौर | 31 | 20 |
| छिंदवाड़ा | 86 | 141 |
| नर्मदापुरम | 202 | 253 |
| शिवपुरी | 353 | 197 |
| सिवनी | 359 | 73 |
| ग्वालियर | 665 | 574 |
| जबलपुर | 700 | 711 |
| शहडोल | 973 | 673 |
| सागर | 1338 | 1168 |
| उज्जैन | 1624 | 927 |
| रीवा | 1927 | 1752 |
| छतरपुर | 2025 | 1841 |
| भोपाल | 2411 | 1179 |
| **कुल** | **12710** | **9509** |

# क्या आप जानते हैं ?

- गिद्ध अनिवार्य रूप से मृतभक्षी होते हैं और भोजन के लिए कभी शिकार नहीं करते। वे केवल मृत जानवर ही खाते हैं।
- वे भोजन की तलाश में दिन भर ऊष्मीय रेखाओं के ऊपर आकाश में उड़ते रहते हैं। वे एक दिन में 100 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। उनके लंबे और चौड़े पंख हवा के बहाव के साथ उनके भारी शरीर को आसानी से ले जाते हैं।
- जब गिद्ध भोजन देख लेते हैं, तो वे आसपास उड़ रहे अन्य गिद्धों से संवाद करने के लिए उस क्षेत्र के ऊपर चक्कर लगाते हैं, जो फिर भोजन करने के लिए इकट्ठा हो जाते हैं।
- भोजन करने वाले गिद्धों के समूह को "वेक" कहा जाता है और यह कुछ ही घंटों में एक बड़े मवेशी के शव को खा सकते हैं।
- गिद्ध बड़े पक्षी होते हैं जो एक बार भोजन करने पर अपने शरीर के वजन का 50% तक खा सकते हैं। यह उतना ही है जितना कि 60 किलो वजन वाला एक औसत इंसान दोपहर के भोजन में 30 किलो भोजन खाने के समान है!!!!
- गिद्ध अपने गले के पास एक त्वचा की थैली में भोजन जमा करते हैं, जिसे क्रॉप कहा जाता है, और कई दिनों तक बिना भोजन के रह सकते हैं।
- गिद्ध दीर्घायु पक्षी हैं और 50–60 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं, लेकिन ये धीमी गति से प्रजनन करने वाले पक्षी भी हैं और 5–6 वर्ष की आयु के बाद प्रति वर्ष केवल एक अंडा दे सकते हैं।

## अध्याय १

# परिचय

## 1.1 गिद्धों का महत्व और गिद्धों की संख्या में गिरावट की पृष्ठभूमि

गिद्ध प्रकृति के सबसे कुशल अपमार्जक के रूप में एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाते हैं। बड़े शाकाहारी जीवों के शवों को सड़ने से पहले खाकर, वे पर्यावरण में रोग पैदा करने वाले रोगाणुओं के प्रसार को रोकने में मदद करते हैं। सड़े हुए मांस का उनका तीव्र और संपूर्ण सेवन जल स्रोतों के दूषित होने की संभावना को कम करता है और संक्रामक रोगों के प्रसार को सीमित करता है, जिनमें मनुष्यों और पालतू पशुओं में फैलने वाले रोग भी शामिल हैं।

गिद्ध सामाजिक पक्षी हैं और अक्सर मानव बस्तियों के निकट संपर्क में रहते हैं, खासकर दक्षिण एशिया में। भारत में, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं ने ऐतिहासिक रूप से स्वस्थ गिद्ध आबादी का समर्थन किया है।

भारत में गिद्धों की आबादी में बड़ी गिरावट के पहले संकेत 1990 के दशक में देखे गए थे। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) के डॉ. विभु प्रकाश, जो केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में गिद्धों की आबादी पर नज़र रख रहे थे, ने संख्या में भारी गिरावट की सूचना दी। जैसे–जैसे यह गिरावट तेज हुई, इसने वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय का ध्यान आकर्षित किया, जिससे इसके कारण का पता लगाने के लिए तत्काल प्रयास शुरू हुए।

इस जाँच में कई चुनौतियाँ आईं। भारत में शोध के लिए गिद्धों को कानूनी तौर पर नहीं मारा जा सकता था, और ताज़े गिद्धों के शवों की उपलब्धता बेहद सीमित थी। देश में गर्मियों में पड़ने वाले उच्च तापमान, जो अक्सर मानसून से पहले 40 डिग्री सेल्सियस से भी ज़्यादा हो जाता है, के कारण यह कठिनाई और भी बढ़ गई, जिससे अपघटन प्रक्रिया तेज़ हो जाती है और शव–परीक्षण जटिल हो जाता है।

इन बाधाओं के बावजूद, शोधकर्ताओं ने अपनी मेहनत जारी रखी। लंदन जूलॉजिकल सोसाइटी के प्रोफ़ेसर एंड्रयू कनिंघम ने कीटनाशक विषाक्तता, औद्योगिक प्रदूषण और संक्रामक रोगों जैसे मृत्यु के सामान्य कारणों को खारिज कर दिया। उन्होंने पहले से अज्ञात किसी विष के शामिल होने का संदेह जताया, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप में गिद्धों की विनाशकारी गिरावट को समझने में एक नए अध्याय की शुरुआत की।

संभावित विषाणुजनित और पर्यावरणीय कारणों की व्यापक जाँच के बाद, गिद्धों की आबादी में नाटकीय गिरावट के पीछे के प्राथमिक कारक की पहचान 2003 में डॉ. लिंडसे ओक्स और पेरेग्रीन फंड की उनकी टीम ने की थी। उनके शोध ने गिद्धों की मृत्यु का कारण डाइक्लोफेनाक, एक गैर–स्टेरायडल सूजनरोधी दवा (एनएसएआईडी) बताया, जो आमतौर पर पशुओं को दी जाती है।

डाइक्लोफेनाक को भारत में पशु चिकित्सा के लिए 1990 के दशक की शुरुआत में पेश किया गया था और इसका व्यापक रूप से मवेशियों और अन्य पशुओं में सूजन, बुखार और दर्द जैसे लक्षणों के इलाज के लिए उपयोग किया जाने लगा। हालाँकि, यह दवा गिद्धों के लिए बेहद घातक साबित हुई। जब गिद्ध उन जानवरों के शवों को खाते हैं जिनका मृत्यु से 72 घंटे पहले डाइक्लोफेनाक से उपचार किया गया था, तो वे दवा की घातक खुराक के संपर्क में आते हैं, जिससे गुर्दे की विफलता के कारण मृत्यु हो जाती है।

ग्रीन एट अल. (2004) द्वारा प्रकाशित एक गणितीय मॉडल ने प्रदर्शित किया कि यदि पर्यावरण में केवल एक प्रतिशत मवेशियों के शव भी डाइक्लोफेनाक से दूषित हों, तो यह भारत भर में देखी गई संख्या में भारी गिरावट का कारण बनने के लिए पर्याप्त होगा। इस निष्कर्ष का समर्थन शुल्ट्ज़ एट अल. द्वारा किए गए एक राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन ने किया। 2006 में पाया गया कि विभिन्न क्षेत्रों से एकत्रित लगभग 10 प्रतिशत मवेशियों के शवों के यकृत ऊतक के नमूनों में डाइक्लोफेनाक का पता लगाने योग्य स्तर पाया गया। इन निष्कर्षों ने एक वैज्ञानिक सफलता प्रदान की और दक्षिण एशिया में गिद्ध संकट को समझने और उसका समाधान करने में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

## 1.2 गिद्धों की संरक्षण स्थिति

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ (IUCN) की रेड डेटा बुक (IUCN, 2017) के अनुसार, गिद्धों की तीन प्रजातियाँ – लंबी चोंच वाला गिद्ध (LBV), सफेद पीठ वाला गिद्ध (WRV), और लाल सिर वाला गिद्ध (RHV), गंभीर रूप से संकटग्रस्त हैं। सफ़ेद गिद्ध (EV) को संकटग्रस्त, जबकि हिमालयी ग्रिफ़ॉन (HG) और सिनेरियस गिद्ध (CV) को संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में रखा गया है। यूरेशियन ग्रिफ़ॉन (EG) को सबसे कम संकटग्रस्त प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। स्ठट और ॅठट भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची–I में भी शामिल हैं। यह संरक्षण स्थिति गिद्धों की इन प्रजातियों को रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी और भारतीय एक सींग वाले गैंडे की तरह संकटग्रस्त की उच्चतम श्रेणी में रखती है।

## 1.3 भारत में गिद्ध प्रजातियाँ

भारत में गिद्धों की नौ प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से सात मध्य प्रदेश  में पाई गई हैं। इन प्रजातियों में गिद्धों की चार जिप्स प्रजातियाँ शामिल हैं: सफेद पीठ वाला गिद्ध (WBV) जिप्स बंगालेंसिस, लंबी चोंच वाला गिद्ध (LBV) जिप्स इंडिकस, हिमालयन ग्रिफ़ॉन (HG) जिप्स हिमालयेंसिस, और यूरेशियन ग्रिफ़ॉन (EG) जिप्स फुल्वस। इनमें से, WBV और LBV स्थानीय गिद्ध हैं, जबकि HG और EG शीतकालीन जिप्स प्रजातियाँ हैं। अन्य प्रजातियाँ एकरूपी हैं, जिनमें लाल सिर वाला गिद्ध (RHV, सार्कोजिप्स कैल्वस) और सफ़ेद गिद्ध (EV, नियोफ्रॉन पर्कनोप्टेरस) स्थानीय गिद्ध हैं।

## 1.4 वर्षों के दौरान मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या का अनुमान

मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या का पहला व्यवस्थित आंकलन 2016 में ग्रीष्म और शीत ऋतु, दोनों के दौरान मध्य प्रदेश वन विभाग और भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (IIFM) के सहयोगात्मक प्रयास से लगाया गया था। IIFM की रिपोर्ट में शीत ऋतु में 6,999 और ग्रीष्म ऋतु में 7,057 गिद्ध दर्ज किए गए थे। संयुक्त विश्लेषण में राज्य भर में औसतन 6,268 वयस्क और 761 किशोर गिद्धों का अनुमान लगाया गया था।

दूसरी गिद्ध गणना 2019 में की गई थी, जिसमें 65 वन वनमंडलो और 8 संरक्षित क्षेत्रों में 885 घोंसले के स्थलों को शामिल किया गया था। सर्वेक्षण में सात प्रजातियों के कुल 8,397 गिद्ध दर्ज किए गए। 2019 के परिणामों ने 2016 की तुलना में गिद्धों की आबादी में उल्लेखनीय वृद्धि का संकेत दिया। 2021 में, केवल शीतकालीन गणना की गई थी, और 7 फरवरी 2021 को 9,446 गिद्ध दर्ज किए गए थे।

2024 की गणना के लिए, दो मौसमी गणनाओं (फरवरी और अप्रैल) को शामिल करने के लिए गणना पद्धति को संशोधित किया गया था। 2024 की शीतकालीन गणना में 10,845 गिद्ध दर्ज किए गए थे। 2025 के सर्वेक्षण में 2024 में इस्तेमाल की गई समान पद्धति का पालन किया गया, जिसमें राज्य भर में कुल 12,710 गिद्ध दर्ज किए गए।

अध्याय २

# सर्वेक्षण क्षेत्र

गिद्धों की गणना मध्य भारत में स्थित पूरे मध्य प्रदेश राज्य में की गई। अपनी समृद्ध जैव विविधता और व्यापक वन आवरण के लिए जाना जाने वाला यह राज्य कई प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास प्रदान करता है, जिनमें कुछ गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियाँ भी शामिल हैं।

सर्वेक्षण में सभी 16 वन वृत्तों को शामिल किया गया, जिसमें 63 वनमंडल शामिल थे और इसमें 10 संरक्षित क्षेत्र (पीए) शामिल थे, इन संरक्षित क्षेत्रों में राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिज़र्व शामिल हैं, जो विभिन्न गिद्ध प्रजातियों के घोंसले और बसेरा स्थलों के लिए जाने जाते हैं।

मध्य प्रदेश की विविध स्थलाकृति, जो पहाड़ियों और पठारों से लेकर नदी के किनारे के जंगलों तक फैली है, विभिन्न गिद्ध प्रजातियों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार के आवासों का समर्थन करती है। यह व्यापक आवृत्ति भूदृश्य स्तर पर गिद्धों की संख्या प्रवृत्तियों, वितरण पैटर्न और आवास वरीयताओं की गहराई से समझ विकसित करने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई, जिससे संरक्षण प्रयासों की दिशा अधिक स्पष्ट और प्रभावी हो सकी।



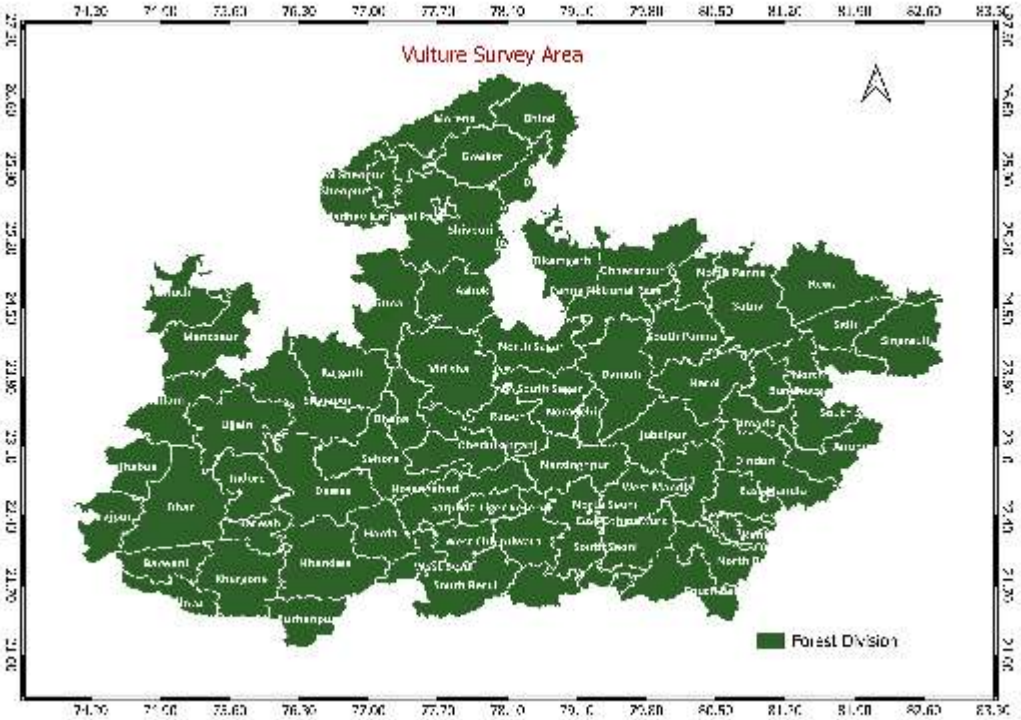


चित्र 1. गिद्ध सर्वेक्षण क्षेत्र

अध्याय ३

# कार्यप्रणाली

मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या के नवीनतम आकलन के लिए, चिन्हित संभावित गिद्ध स्थलों पर बिंदु गणना (Point Count) पद्धति का उपयोग किया गया। इस तकनीक का उपयोग पहले फरवरी में शीतकालीन गणना के साथ–साथ ग्रीष्मकालीन गणना के लिए भी किया गया था। यह दृष्टिकोण मध्य प्रदेश में 2025 की अवधि के लिए व्यापक राज्य–स्तरीय सर्वेक्षण का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य राज्य भर में गिद्धों की संख्या की निगरानी और मूल्यांकन करना है।

घोंसला स्थल

बसेरा स्थल

## 3.1 संभावित स्थलों की पहचान

इस व्यापक सर्वेक्षण के प्रारंभिक चरण में मध्य प्रदेश भर में गिद्धों के संभावित स्थलों की सावधानीपूर्वक पहचान की गई। यह पहचान प्रक्रिया व्यापक क्षेत्रों से एकत्रित अनुभवजन्य साक्ष्यों और वास्तविक रिपोर्टों पर आधारित थी। परिणामस्वरूप, राज्य में बड़ी संख्या में संभावित स्थलों की पहचान की गई। ये स्थल 16 वनवृत्तों, 63 वनमंडलो और 10 संरक्षित क्षेत्रों में फैले हुए थे। स्थलों की यह व्यापक और व्यवस्थित पहचान राज्य में गिद्धों की आबादी के विस्तृत क्षेत्र और आकलन को सुनिश्चित करती है, जिससे संरक्षण प्रयासों के लिए बहुमूल्य जानकारी मिलती है।

## 3.2 कौशल निर्माण

गिद्धों की संख्या के आकलन के लिए संभावित स्थलों की पहचान के बाद, सर्वेक्षण में शामिल कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण का एक महत्वपूर्ण चरण शुरू किया गया, जिसमें सभी 16 सर्किलों, 63 प्रभागों और 10 संरक्षित क्षेत्रों के नोडल अधिकारी, वनमंडलाधिकारी (डीएफओ), उप–मंडलाधिकारी (एसडीओ), रेंज अधिकारी, कर्मचारी और डेटा एंट्री ऑपरेटर शामिल थे। यह चरण उन स्थानों पर केंद्रित था जहाँ गिद्धों की महत्वपूर्ण आबादी पाई जाती है, और इन क्षेत्रों में सटीक डेटा संग्रह और प्रजातियों की पहचान के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

## प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

क्षमता निर्माण प्रयासों में कई प्रमुख क्षेत्रों में प्रतिभागियों के कौशल को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल थे। इन क्षेत्रों में विभिन्न गिद्ध प्रजातियों की पहचान शामिल थी, जो इस क्षेत्र में गिद्ध प्रजातियों की विविधता और प्रजाति–विशिष्ट संरक्षण रणनीतियों के महत्व को देखते हुए एक महत्वपूर्ण कौशल है। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण में डेटा संग्रह और दस्तावेज़ीकरण के प्रभावी तरीकों को शामिल किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि सर्वेक्षण के दौरान एकत्र की गई जानकारी सटीक और व्यवस्थित रूप से दर्ज की जाएगी।

इन प्रशिक्षण पहलों का समर्थन करने के लिए, एक विशेष गिद्ध पहचान मार्गदर्शिका तैयार की गई थी। यह मार्गदर्शिका क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए एक आवश्यक संसाधन के रूप में कार्य करती है, जो विभिन्न गिद्ध प्रजातियों की विशेषताओं और पहचान चिह्नों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। मार्गदर्शिका को सभी वनमंडलो में वितरित किया गया।





## 3.3 क्षेत्र सर्वेक्षण और डेटा संग्रहण

अवलोकनों को पहले एक क्षेत्र (प्रपत्र–I) में दर्ज किया गया और फिर गूगल फॉर्म में दर्ज किया गया। सभी वनमंडलो और संरक्षित क्षेत्रों द्वारा हार्ड कॉपी भी भरकर संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान–चिड़ियाघर को अलग–अलग जमा की गई, जो इस पूरे अभ्यास का समन्वय कर रहे थे। एकत्रित डेटा को वन विहार निदेशक के मार्गदर्शन में वन विहार टीम द्वारा डाउनलोड और विश्लेषित किया गया। डेटा को एक माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल शीट में स्थानांतरित किया गया और वनमंडलो और संरक्षित क्षेत्र के नाम के अनुसार अलग किया गया।

गिद्धों की कुल संख्या की गणना वनमंडलो और संरक्षित क्षेत्र के अनुसार की गई। गिद्धों की संख्या विभिन्न श्रेणियों जैसे वन भूमि, राजस्व भूमि, स्मारकों, चट्टानों, पेड़ों, भोजन स्थलों, घोंसले के स्थलों, जल निकायों आदि पर दर्ज की गई। उपलब्ध आंकड़ों से गिद्धों की संख्या की गणना की गई। सर्वेक्षण डेटा के संकलन के बाद, विभिन्न वनमंडलो में और साथ ही प्रजाति–वार गिद्ध प्रजातियों के स्थानिक वितरण को दर्शाने वाले जीआईएस–आधारित मानचित्र बनाने के लिए जीपीएस जानकारी का उपयोग किया गया।

अध्याय ४

# परिणाम

## 4.1 प्रजाति विविधता

सर्वेक्षण 2025 में मध्य प्रदेश से गिद्धों की नौ में से सात प्रजातियाँ दर्ज की गईं।

## प्रजातियाँ:

1. लंबी चोंच वाला गिद्ध
2. सफेद पीठ वाला गिद्ध
3. सफ़ेद गिद्ध
4. लाल सिर वाला गिद्ध
5. हिमालयन ग्रिफ़ॉन
6. यूरेशियन ग्रिफ़ॉन
7. सिनेरियस गिद्ध

## 4.2 गिद्धों की स्थिति

सर्वेक्षण के दौरान दर्ज की गई सात गिद्ध प्रजातियों में से, चार लंबी चोंच वाले गिद्ध (LBV), सफेद पीठ वाले गिद्ध (WRV), और लाल सिर वाले गिद्ध (RHV) को स्थानीय प्रजातियों के रूप में पहचाना गया। सफ़ेद गिद्ध (EV) में स्थानीय और प्रवासी दोनों प्रकार की आबादी पाई गई, दोनों का सर्वेक्षण में दस्तावेजीकरण किया गया। सर्वेक्षण अवधि के दौरान हिमालयन ग्रिफ़ॉन (HG), यूरेशियन ग्रिफ़ॉन (EG), और सिनेरियस गिद्ध (CV) को शीतकालीन प्रवासी प्रजातियों के रूप में दर्ज किया गया।

## 4.3 राज्य में गिद्धों की अनुमानित संख्या फरवरी, 2025 में कुल 12710 गिद्धों की संख्या प्राप्त की गई।

चित्र 2. मध्यप्रदेश में गिद्धों का भौगोलिक वितरण

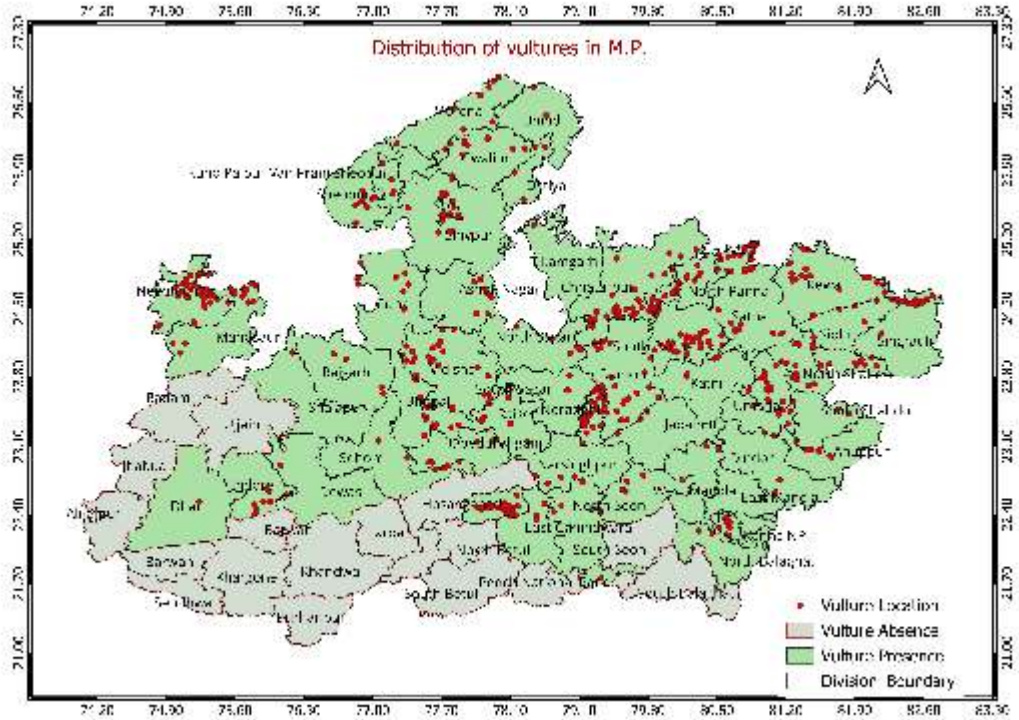

## लंबी चोंच वाला गिद्ध

## Long-billed Vulture

*Gyps indicus*

चित्र 3. लंबी चोंच वाला गिद्ध
(जिप्स इंडिकस)

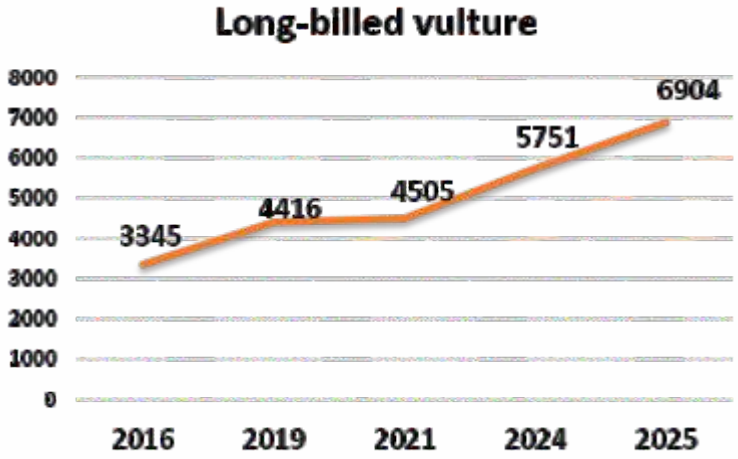


लंबी चोंच वाले गिद्धों की आबादी में पिछले कुछ वर्षों में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो 2016 में 3,345 से बढ़कर 2025 में 6,904 हो गई है। यह प्रजाति सर्वेक्षण किए गए क्षेत्रों में सबसे प्रचुर मात्रा में बनी हुई है, जो सफल संरक्षण और निगरानी प्रयासों को दर्शाती है।

चित्र 4. लंबी चोंच वाले गिद्ध का भौगोलिक वितरण

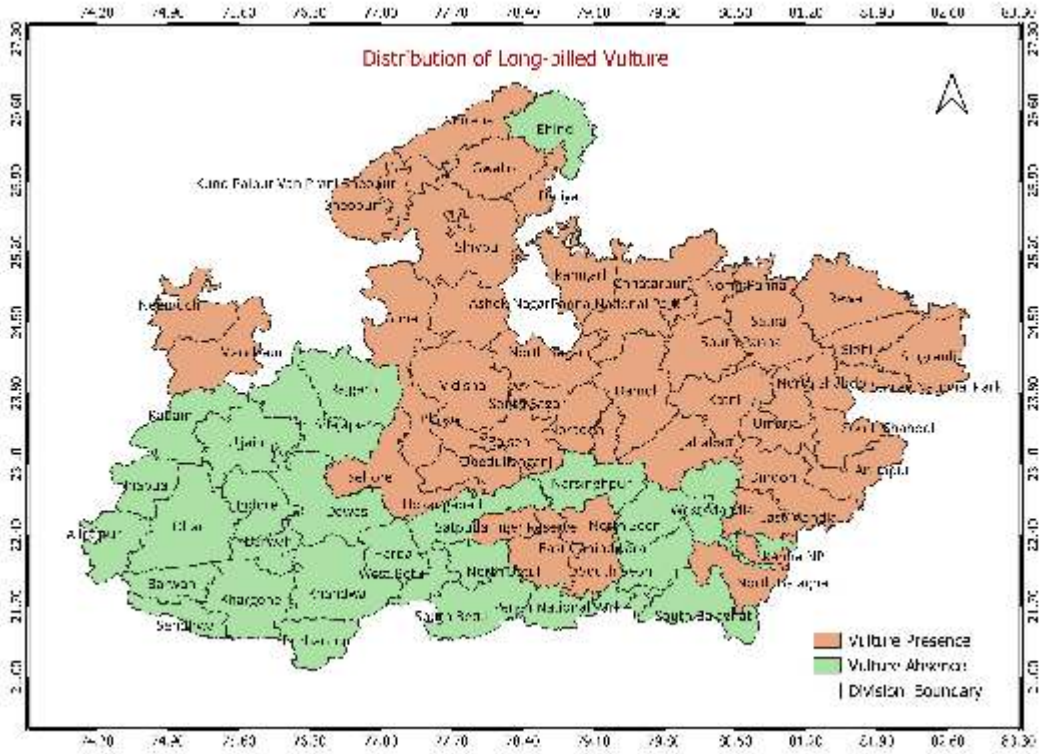

## सफेद पीठ वाला गिद्ध

## White-rumped Vulture, White-backed Vulture

## *Gyps bengalensis*

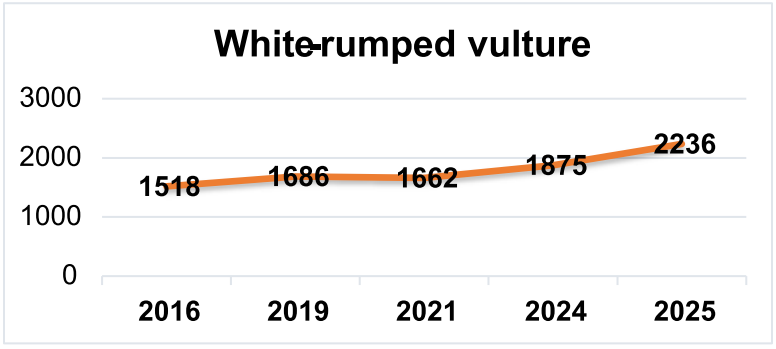


चित्र 5. सफेद पीठ वाला गिद्ध
(जिप्स बंगालेंसिस)





सफेद पीठ वाले गिद्धों की आबादी में भी पिछले कुछ वर्षों में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो 2016 में 1,518 से बढ़कर 2025 में 2,236 हो गई है।

चित्र 6. सफेद पीठ वाला गिद्ध का भौगोलिक वितरण

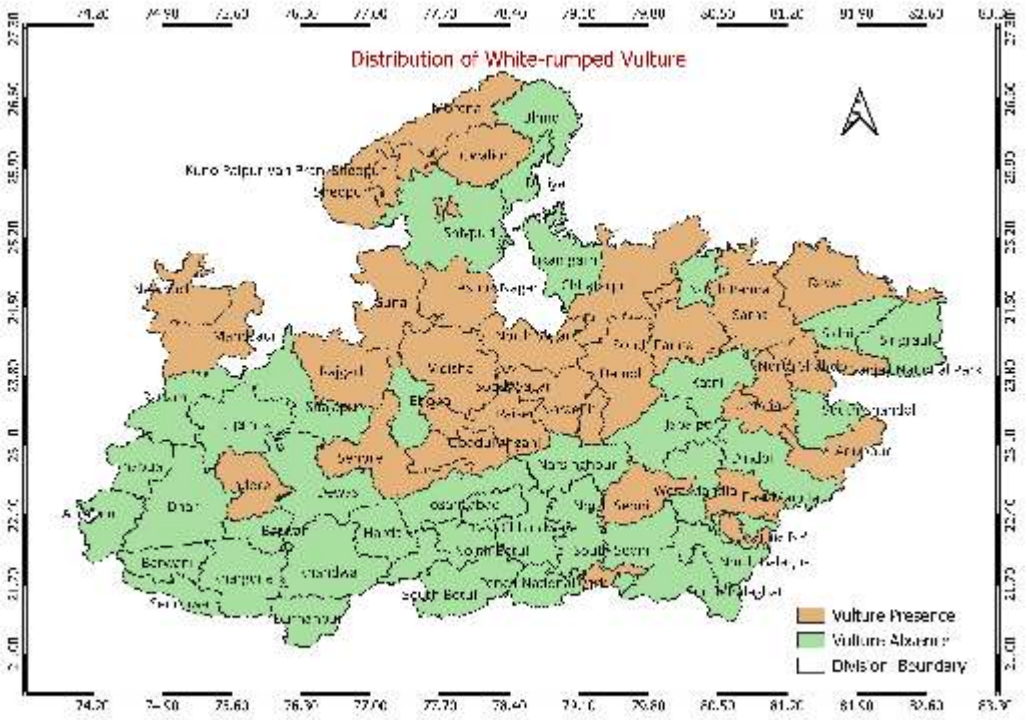

## सफेद गिद्ध

## Egyptian Vulture

## *Neophron percnopterus*

चित्र 7. सफ़ेद गिद्ध (नियोफ्रॉन पर्कनोप्टेरस)

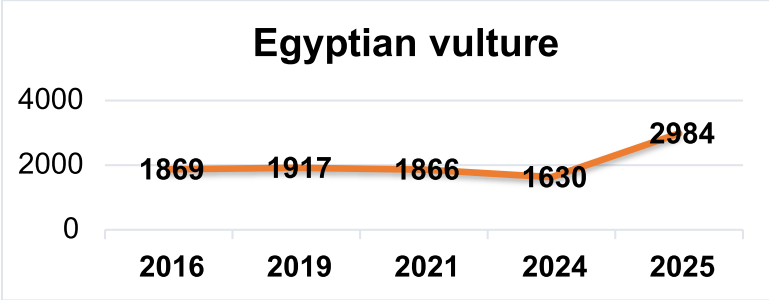


सफ़ेद गिद्ध की आबादी में उतार–चढ़ाव देखा गया, जो 2019 में 1,917 के शिखर पर पहुंच गई, तथा 2024 में घटकर 1,630 रह गई। हालांकि, 2025 के सर्वेक्षण में इसमें तीव्र वृद्धि दर्ज की गई, तथा यह संख्या 2,984 हो गई।

चित्र 8. सफ़ेद गिद्ध का भौगोलिक वितरण

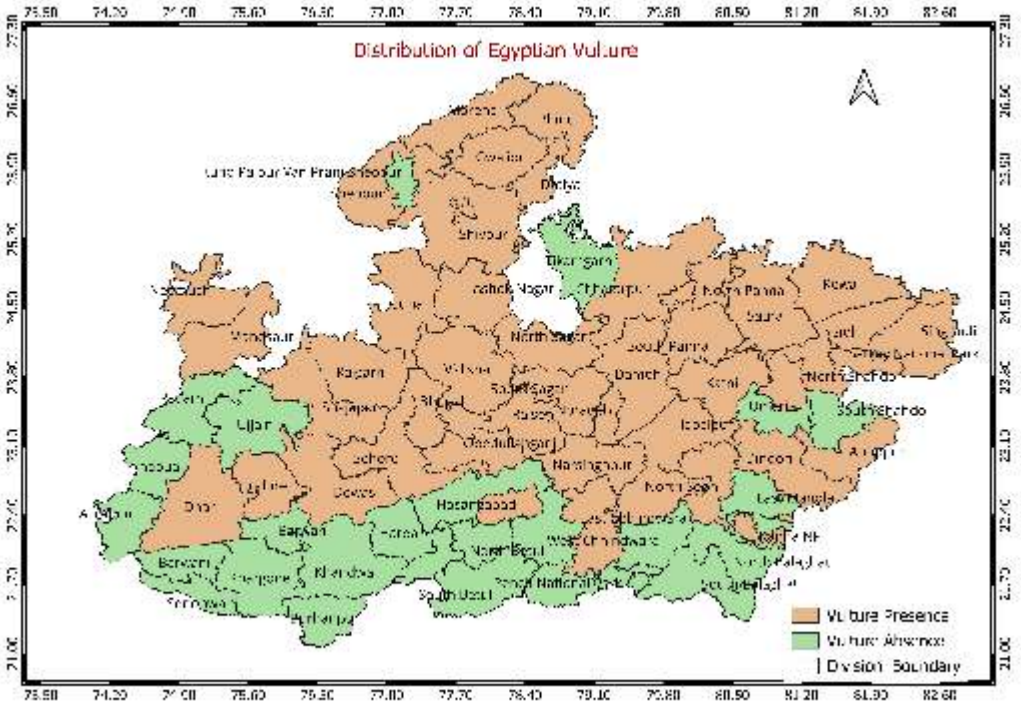

# लाल सिर वाला गिद्ध
## Red-headed Vulture
## *Sacrogyps calvus*

चित्र 9. लाल सिर वाला गिद्ध
(सैक्रोजिप्स कैल्वस)

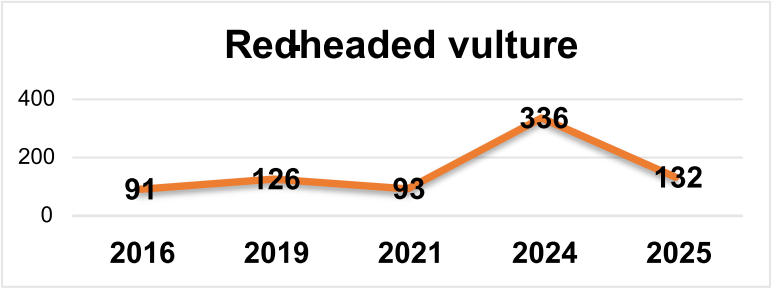


लाल सिर वाले गिद्ध की संख्या इस वर्ष काम दर्ज की गई है जो 2016 में 91 से बढ़कर 2024 में 336 के शिखर पर पहुंच जाएगी, तथा उसके बाद 2025 में पुनः घटकर 132 हो गई ।

चित्र 10. लाल सिर वाले गिद्ध का भौगोलिक वितरण

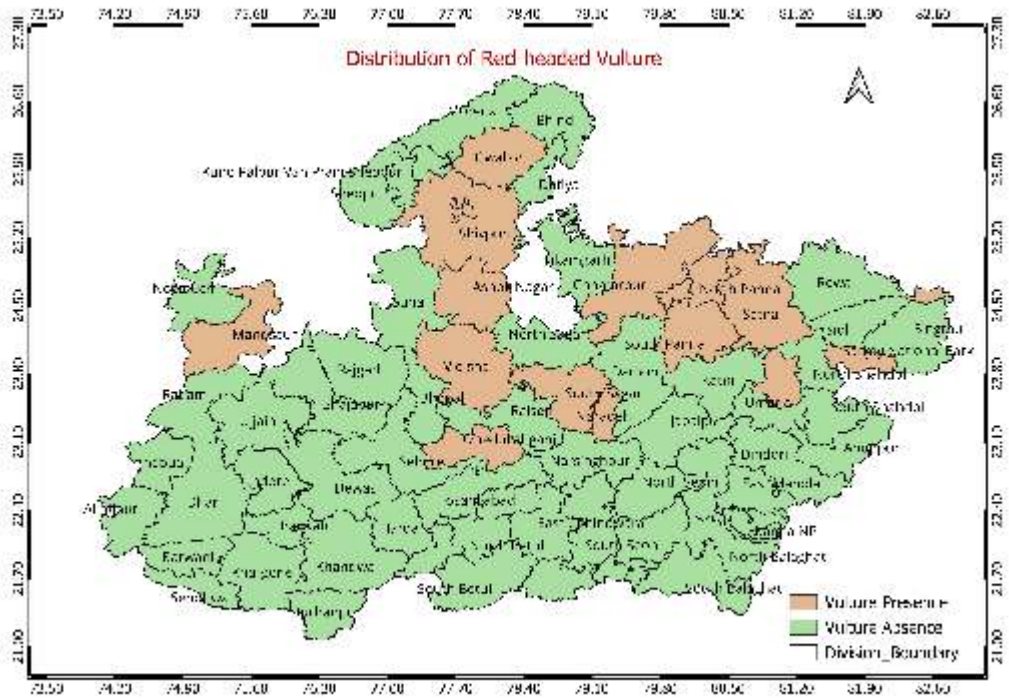

# हिमालयन ग्रिफ़ॉन
# Himalayan Griffon
## *Gyps himalyensis*

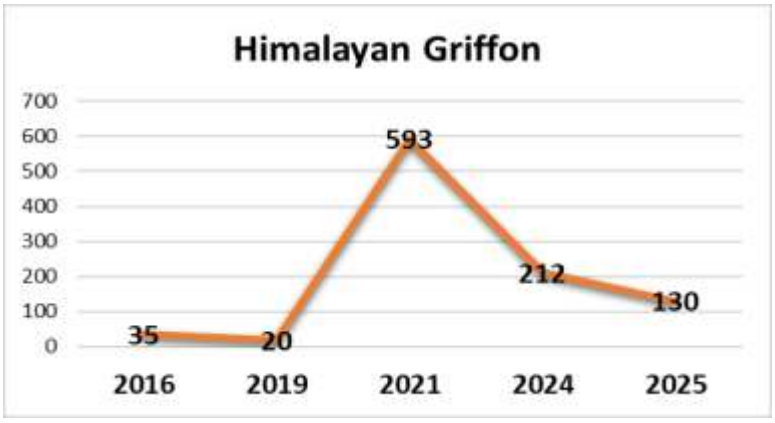


चित्र 11. हिमालयन ग्रिफ़ॉन
(जिप्स हिमालयेंसिस)

हिमालयन ग्रिफ़ॉन की संख्या के अनुमानों में काफ़ी भिन्नता देखी गई है। 2016 में यह संख्या 35 दर्ज की गई थी, जो 2021 में 593 के उच्चतम स्तर पर पहुँच गई और फिर 2025 में घटकर 130 रह गई। 2021 का आँकड़ा स्थायी संख्या वृद्धि के बजाय अस्थायी प्रवासी प्रवाह को दर्शा सकता है।

**चित्र 12. हिमालयन ग्रिफ़ॉन का भौगोलिक वितरण**

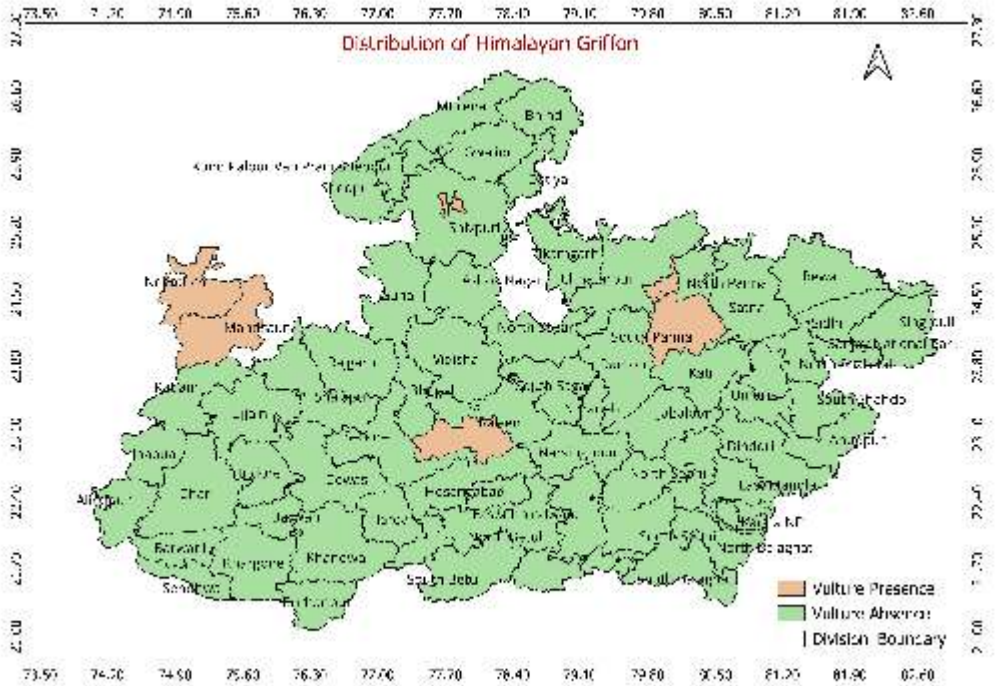

## यूरेशियन ग्रिफ़ॉन
## Eurasian Griffon
## *Gyps fulvus*

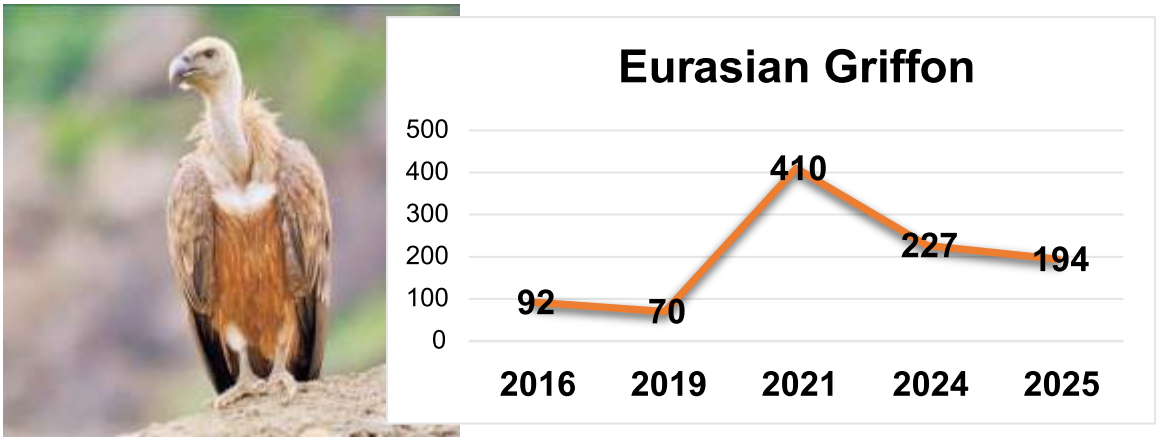


चित्र 13. यूरेशियन ग्रिफ़ॉन (जिप्स फुल्वस)





यूरेशियन ग्रिफ़ॉन की आबादी 2016 में 92 से बढ़कर 2021 में 410 हो गई, और फिर 2025 में घटकर 194 हो गई। हालाँकि यह 2021 के शिखर से कम है, फिर भी 2025 की गणना 2016 की आबादी के दोगुने से अधिक का प्रतिनिधित्व करती है। यह वृद्धि और उसके बाद गिरावट प्रवासी व्यवहार के कारण हो सकती है।

**चित्र 14. यूरेशियन ग्रिफ़ॉन का भौगोलिक वितरण**

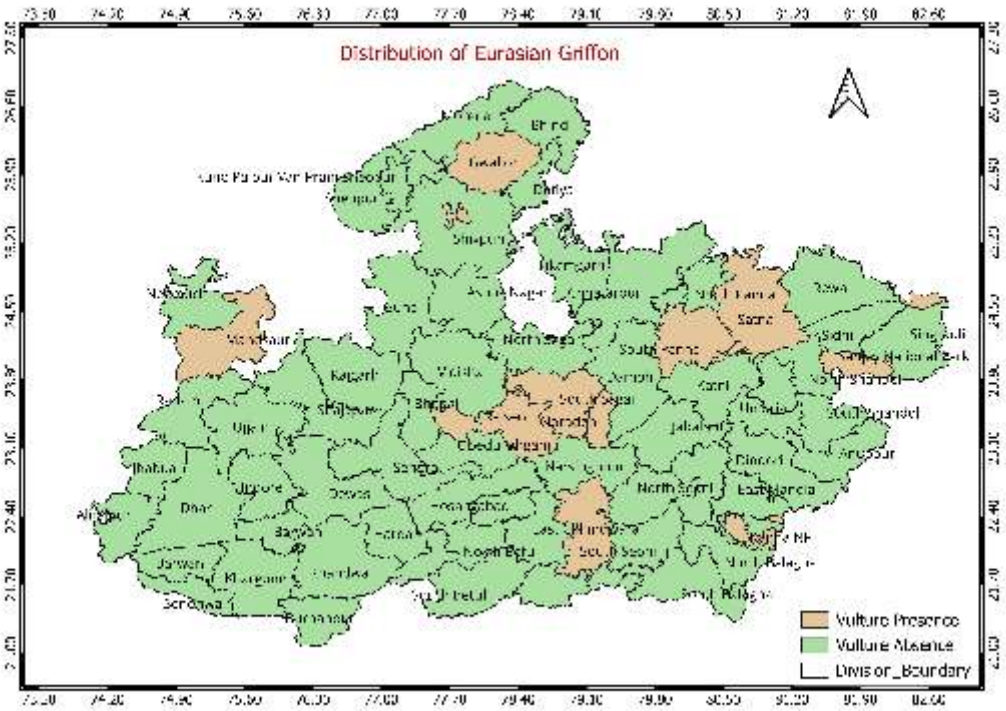

# सिनेरियस गिद्ध
## Cinereous Vulture
## *Aegypius monachus*

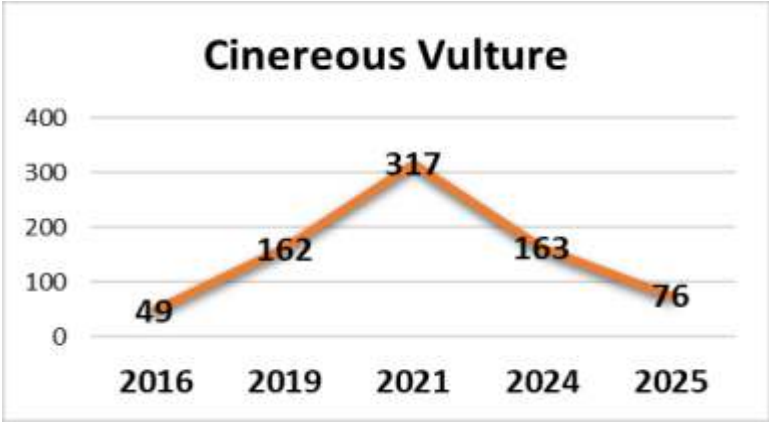


चित्र 15. सिनेरियस गिद्ध (एजिपियस मोनेचस)

सिनेरियस वल्चर ने 2016 में 49 से 2021 में 317 के उच्च स्तर तक उल्लेखनीय वृद्धि दिखाई, लेकिन उसके बाद से 2025 में केवल 76 तक तेजी से गिरावट आई है। यह आंकड़ा एक अस्थायी प्रवासी प्रवाह को दर्शा सकता है।

**चित्र 16. सिनेरियस गिद्ध का भौगोलिक वितरण**

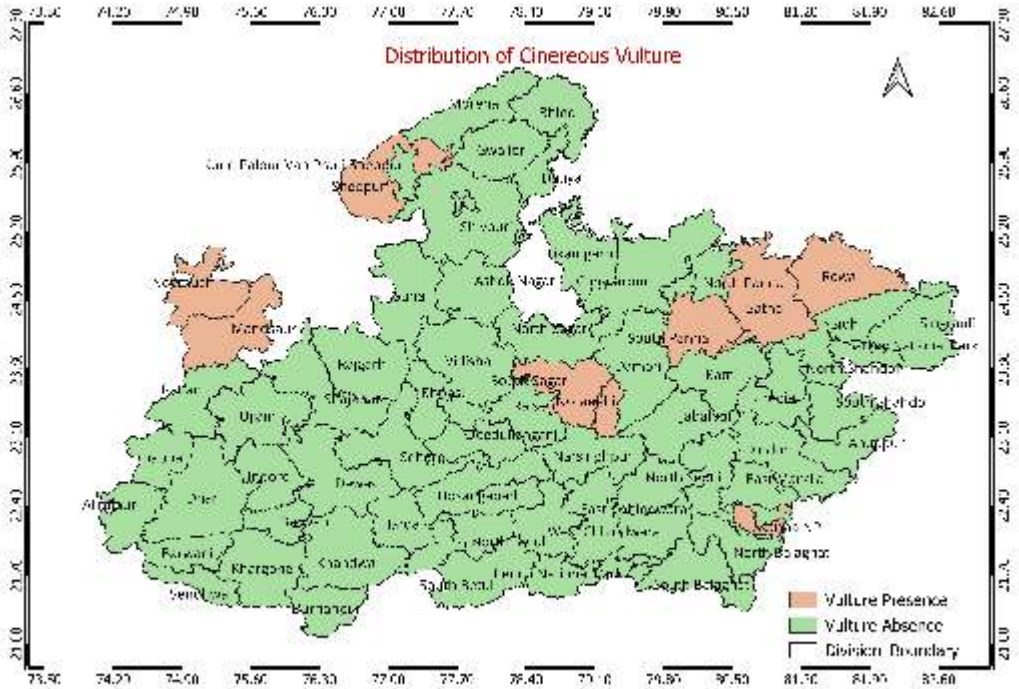

# गिद्धों की प्रजातिवार संख्या

चित्र 17. गिद्धों की प्रजातिवार संख्या

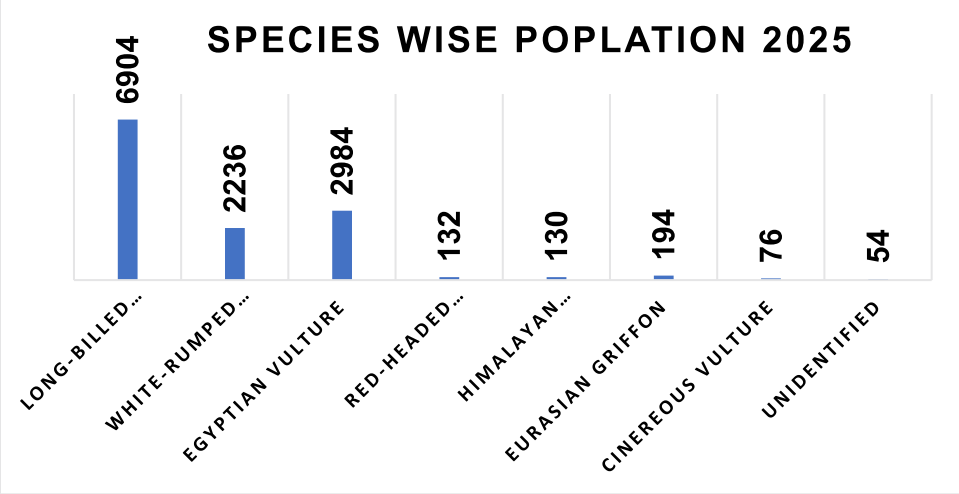


तालिका 2. मध्यप्रदेश में गिद्धों की प्रजातिवार संख्या

| प्रजाति | 2016 | 2019 | 2021 | 2024 | 2025 |
|---|---|---|---|---|---|
| लंबी चोंच वाला गिद्ध | 3345 | 4416 | 4505 | 5751 | 6904 |
| सफेद पीठ वाला गिद्ध | 1518 | 1686 | 1662 | 1875 | 2236 |
| सफेद गिद्ध | 1869 | 1917 | 1866 | 1630 | 2984 |
| लाल सिर वाला गिद्ध | 91 | 126 | 93 | 336 | 132 |
| हिमालयन ग्रिफ़ॉन | 35 | 20 | 593 | 212 | 130 |
| यूरेशियन ग्रिफ़ॉन | 92 | 70 | 410 | 227 | 194 |
| सिनेरियस गिद्ध | 49 | 162 | 317 | 163 | 76 |
| अज्ञात | — | — | — | 651 | 54 |

2016 से 2025 तक, गिद्धों की कुल आबादी में 6,999 से 12,710 तक लगातार और प्रभावशाली वृद्धि देखी गई है। यह 9 वर्षों की अवधि में लगभग 82% की समग्र वृद्धि दर्शाता है। यह वृद्धि निरंतर रही, और 2024 और 2025 के बीच वार्षिक वृद्धि (17%) देखी गई।

लंबी चोंच वाले गिद्ध और सफ़ेद गिद्ध जैसी प्रजातियों की सांख्या में मजबूत सुधार हुआ है और वे कुल आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। सफेद पीठ वाले गिद्ध की सांख्या में भी लगातार सुधार हुआ है।

हालांकि, लाल सिर वाले, हिमालयी और सिनेरियस गिद्ध जैसी प्रजातियों में उतार–चढ़ाव या गिरावट देखी गई, जो अस्थिरता का संकेत है। 2024 और 2025 में अज्ञात गिद्धों की उपस्थिति क्षेत्र सर्वेक्षणों के दौरान प्रजातियों के स्तर पर पहचान न होने के कारण को दर्शाती है

## 4.4 मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या प्रवृत्ति

राज्य में दर्ज गिद्धों की कुल संख्या 2016 में 6999, 2019 में 8397, 2021 में 9446 और 2024 में 10845 थी। इस प्रकार, 2016 और 2019 के बीच गिद्धों की संख्या में 19.98%, 2019 और 2021 के बीच 12.49% और 2021 और 2024 के बीच 14.83% की वृद्धि हुई। वर्तमान सर्वेक्षण में 2024 से 2025 के बीच गिद्धों की संख्या में 17% की सकारात्मक वृद्धि देखी गई है।

चित्र 18. मध्य प्रदेश में वर्षवार गिद्धों की संख्या

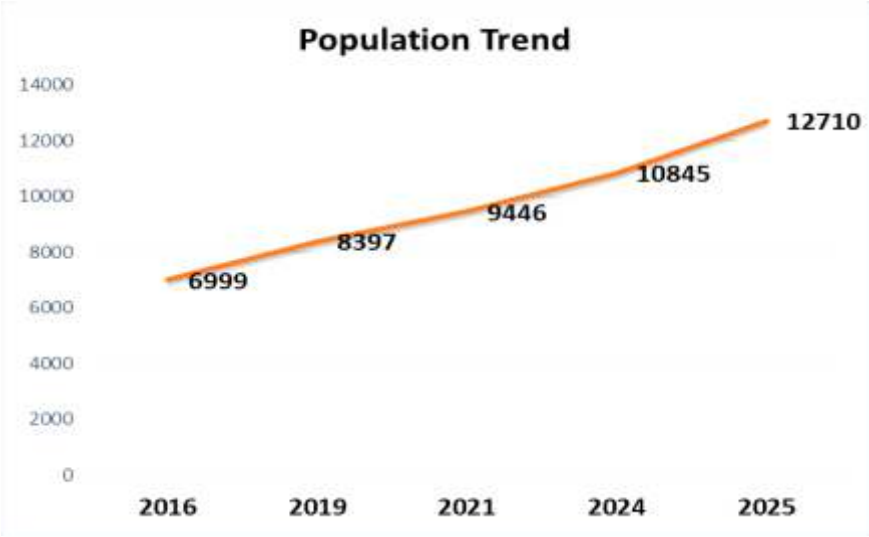

## 4.5 विभिन्न संरक्षित क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या

मध्य प्रदेश के प्रमुख संरक्षित क्षेत्रों में 2025 में किए गए गिद्ध संख्या सर्वेक्षण से गिद्धों के क्षेत्रीय वितरण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली है। इन संरक्षित क्षेत्रों में कुल संख्या कुछ स्थानों पर बढ़ती आबादी का संकेत देती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से कम संख्या दिखाई देती है, जो अधिक लक्षित संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता का संकेत देती है।

वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व सागर में 817 गिद्धों की सबसे अधिक संख्या दर्ज की गई, जिससे यह संरक्षित क्षेत्रों में गिद्धों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवास बन गया।

पन्ना टाइगर रिजर्व में 691 गिद्धों की संख्या के साथ यह दूसरे स्थान पर रहा, जिसने एक महत्वपूर्ण गिद्ध संरक्षण स्थल के रूप में इसकी स्थिति की पुष्टि की।

रातापानी टाइगर रिजर्व में भी 549 गिद्धों की अच्छी संख्या दर्ज की गई, जिससे यह संख्या के आकार के मामले में तीसरे स्थान पर रहा। इससे पता चलता है कि इस क्षेत्र का भौगोलिक और भोजन की उपलब्धता, गिद्धों के आवास और संभवतः प्रजनन के लिए उपयुक्त है।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व (टीआर), कान्हा टाइगर रिज़र्व और संजय टाइगर रिज़र्व ने भी क्रमशः 305, 259 और 212 गिद्धों की आबादी के साथ महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इसके विपरीत, सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व (202), कुनो नेशनल पार्क (106), और माधव टाइगर रिज़र्व (53) में कम संख्या दर्ज की है।

पेंच टाइगर रिज़र्व में केवल 13 गिद्धों के साथ सबसे कम संख्या दर्ज की गई, जो क्षेत्र में आवास उपयुक्तता के बारे में एक संभावित चिंता को उजागर करता है।

2025 का सर्वेक्षण मध्य प्रदेश में गिद्ध संरक्षण के गढ़ के रूप में वीडीटीआर, पन्ना टीआर और रातापानी टीआर जैसे संरक्षित क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित करता है। साथ ही, पेंच टीआर और माधव टीआर जैसे कम गिद्ध संख्या वाले क्षेत्रों को बेहतर निगरानी, सुरक्षा उपायों और पारिस्थितिक बहाली से लाभ हो सकता है। क्षेत्र में गिद्ध आबादी के अस्तित्व और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए सभी रिजर्व में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

**चित्र 19. मध्य प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या**

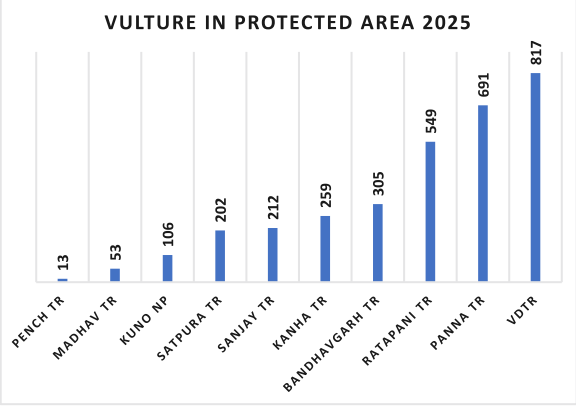


**तालिका 3. संरक्षित क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या**

| क्रम संख्या | संरक्षित क्षेत्र का नाम | कुल संख्या |
|---|---|---|
| 1 | पेंच टाइगर रिज़र्व (Pench TR) | 13 |
| 2 | माधव टाइगर रिज़र्व (Madhav TR) | 53 |
| 3 | कुनो राष्ट्रीय उद्यान (Kuno NP) | 106 |
| 4 | सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व (Satpura TR) | 202 |
| 5 | संजय टाइगर रिज़र्व (Sanjay TR) | 212 |
| 6 | कान्हा टाइगर रिज़र्व (Kanha TR) | 259 |
| 7 | बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व (Bandhavgarh TR) | 305 |
| 8 | रातापानी टाइगर रिज़र्व (Ratapani TR) | 549 |
| 9 | पन्ना टाइगर रिज़र्व (Panna TR) | 691 |
| 10 | वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व (VDTR) | 817 |

## 4.6 मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों (वनवृत्त) में गिद्धों की संख्या का अवलोकन

2025 में, मध्य प्रदेश में गिद्धों की संख्या में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है । भोपाल में गिद्धों की संख्या सबसे ज़्यादा 2,411 दर्ज की गई, इसके बाद छतरपुर में 2,025 गिद्ध और रीवा में 1,927 गिद्ध पाई गई हैं। उज्जैन में 1,624 गिद्धों की अच्छी संख्या पाई गई है, जो इन क्षेत्रों में स्थिर और समृद्ध आवासों को दर्शाता है।

शहडोल (973 गिद्ध), जबलपुर (700 गिद्ध) और ग्वालियर (665 गिद्ध) जैसे अन्य क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या मध्यम है, जो दर्शाता है कि इन क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या अपेक्षाकृत अच्छी है, हालाँकि निरंतर निगरानी और संरक्षण प्रयासों की अभी भी आवश्यकता है।

दूसरी ओर, बैतूल और खंडवा जैसे कुछ क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या बिल्कुल नहीं है, जो संभावित पारिस्थितिक दबाव या आवास के नुकसान की ओर इशारा करता है। इसके अलावा, बालाघाट (16) और इंदौर (31) में गिद्धों की संख्या कम पाई गई है, जिससे संकेत मिलता है कि इन क्षेत्रों को भोजन के स्रोतों या आवास की उपलब्धता से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

आँकड़े बताते हैं कि जहाँ भोपाल और छतरपुर जैसे क्षेत्रों में गिद्धों की आबादी मज़बूत और स्थिर है, वहीं बैतूल और खंडवा जैसे क्षेत्रों में गिद्धों की आबादी के निरंतर अस्तित्व और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

चित्र 20. वृत्तवार गिद्धों की संख्या

चित्र 20. वृत्तवार गिद्धों की संख्या

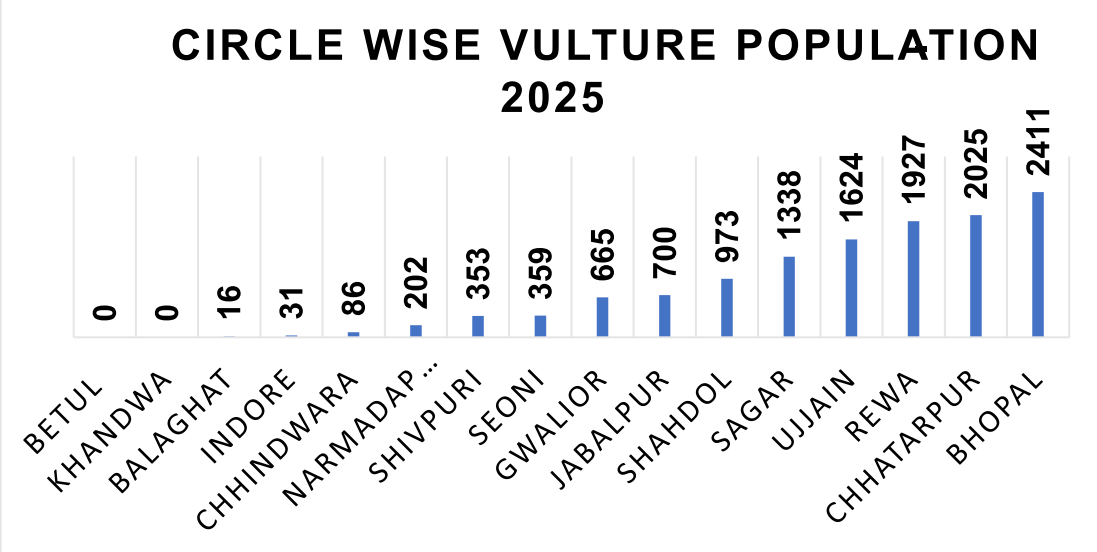

## 4.7 सर्वेक्षण के दौरान देखे गए गिद्धों के प्रजाति–वार घोंसले

### लंबी चोंच वाला गिद्ध

LBV में घोंसले बनाने वालों की संख्या सबसे अधिक 1521 है, जो दर्शाता है कि यह सर्वेक्षण किए गए क्षेत्रों में सबसे अधिक आबादी वाली गिद्ध प्रजाति है। यह बड़ी संख्या अपेक्षाकृत स्थिर आबादी या सफल प्रजनन का संकेत देती है।

### सफ़ेद गिद्ध

EV प्रजाति में घोंसले बनाने वालों की संख्या 391 है, जो महत्वपूर्ण है लेकिन स्टट जितनी अधिक नहीं है। यह संकेत दे सकता है कि प्रजनन जोड़े तो कई हैं, लेकिन कुछ पर्यावरणीय या पारिस्थितिक कारक उनकी संख्या को सीमित कर रहे हैं।

### सफेद पीठ वाला गिद्ध

318 की घोंसले बनाने वालों की संख्या के साथ, WRV की सर्वेक्षण किए गए क्षेत्रों में मध्यम उपस्थिति है। यह प्रजाति सर्वेक्षण क्षेत्रों में एक स्वस्थ वितरण दर्शाती है।

### लाल सिर वाला गिद्ध

RHV में घोंसले बनाने वालों की संख्या सबसे कम केवल 9 है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। इसकी आबादी को प्रभावित करने वाले कारकों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

चित्र 21. मध्य प्रदेश में गिद्धों के घोसलो का वितरण

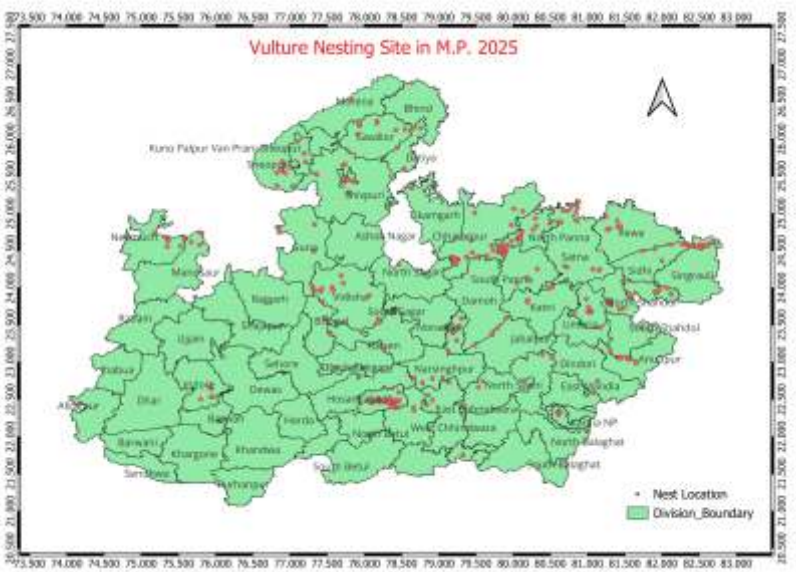


चित्र 22. गिद्धों के प्रजातिवार घोंसले

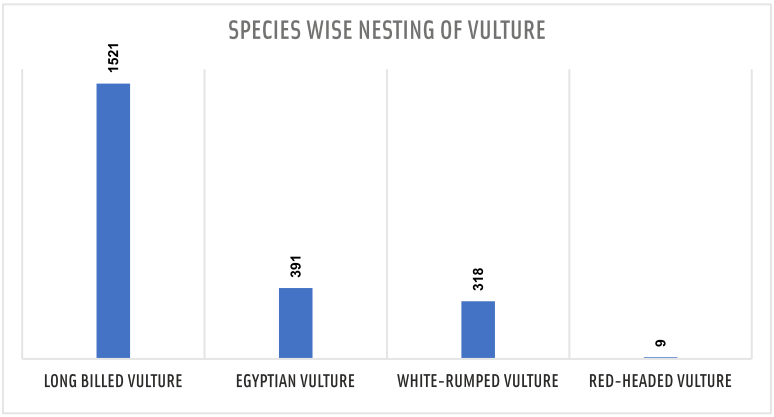


चित्र 23. गिद्धों के प्रजातिवार घोंसले

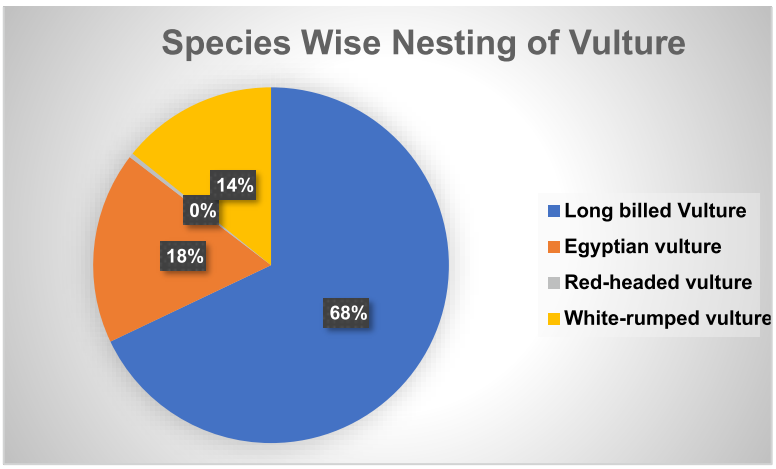

# अध्याय ५
# ग्रीष्म ऋतु में गिद्धों की गणना

सर्वेक्षण विशेष रूप से राज्य में पाई जाने वाली स्थानीय (निवासी) गिद्ध प्रजातियों, विशेष रूप से लंबी चोंच वाले गिद्ध, सफेद पीठ वाले गिद्ध, सफ़ेद गिद्ध और लाल सिर वाले गिद्ध पर केंद्रित था। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य मध्य प्रदेश में इन स्थानीय प्रजातियों की आबादी का अनुमान लगाना और भविष्य के संरक्षण प्रयासों का मार्गदर्शन करने के लिए उनके भौगोलिक वितरण का विश्लेषण करना था।

गिद्धों की सबसे अधिक आबादी वाले क्षेत्र छतरपुर, रीवा और सागर थे, जहाँ छतरपुर में सबसे अधिक 1,841 गिद्ध पाए गए। इन क्षेत्रों को संरक्षण गतिविधियों के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए, क्योंकि यहाँ गिद्धों की महत्वपूर्ण आबादी है। रीवा और सागर में भी गिद्धों की उच्च सांद्रता देखी गई, जहाँ क्रमशः 1,752 और 1,168 गिद्ध थे।

दूसरी ओर, बालाघाट, बैतूल और खंडवा जैसे क्षेत्रों में सर्वेक्षण के दौरान किसी भी गिद्ध के न पाए जाने की सूचना नहीं मिली।

इंदौर, सिवनी, शिवपुरी और नर्मदापुरम जैसे मध्यम गिद्ध आबादी वाले क्षेत्रों में गिद्धों की संख्या 20 से 253 के बीच मध्यम रही।

मध्य प्रदेश में गिद्ध संख्या सर्वेक्षण (ग्रीष्मकालीन गणना 2025) ने राज्य भर में गिद्ध प्रजातियों के वितरण के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की है। 9,509 गिद्धों की कुल आबादी के साथ, यह सर्वेक्षण गिद्धों की उच्च संख्या वाले क्षेत्रों और गिद्धों की अनुपस्थिति या कमी वाले क्षेत्रों, दोनों पर प्रकाश डालता है।

**तालिका 4. ग्रीष्म ऋतु में गिद्धों की वृत्तवार संख्या**

| क्रम संख्या | वनवृत्त का नाम | ग्रीष्मकालीन गणना 2025 |
|---|---|---|
| 1 | बैतूल | 0 |
| 2 | खंडवा | 0 |
| 3 | बालाघाट | 0 |
| 4 | इंदौर | 20 |
| 5 | छिंदवाड़ा | 141 |
| 6 | नर्मदापुरम | 253 |
| 7 | शिवपुरी | 197 |
| 8 | सिवनी | 73 |
| 9 | ग्वालियर | 574 |
| 10 | जबलपुर | 711 |
| 11 | शहडोल | 673 |
| 12 | सागर | 1168 |
| 13 | उज्जैन | 927 |
| 14 | रीवा | 1752 |
| 15 | छतरपुर | 1841 |
| 16 | भोपाल | 1179 |
| | कुल | 9509 |

## 5.1 ग्रीष्मकाल गणना 2025 में गिद्धों की प्रजातिवार संख्या

मध्य प्रदेश में लंबी चोंच वाला गिद्ध सबसे अधिक संख्या वाला गिद्ध बना हुआ है, जिसकी 2025 की ग्रीष्मकाल में कुल 5,835 गिद्धों की संख्या दर्ज की गई है।

सफेद पीठ वाला गिद्ध, 1,607 गिद्धों के साथ, इस क्षेत्र में सफेद पीठ वाले गिद्ध की एक महत्वपूर्ण संख्या है।

मिस्री गिद्धों की संख्या 1,440 है। यह प्रजाति अपनी विस्तृत आवास प्राथमिकताओं और अपमार्जक व्यवहार के लिए जानी जाती है।

लाल सिर वाले गिद्ध की संख्या सबसे कम दर्ज की गई है, जिसकी संख्या केवल 111 है। इस प्रजाति को और अधिक गिरावट से बचाने के लिए तत्काल संरक्षण उपायों की आवश्यकता है।

अज्ञात (UN) के रूप में 516 गिद्ध दर्ज किए गए।

**चित्र 24. ग्रीष्मकाल में गिद्धों की प्रजातिवार संख्या**

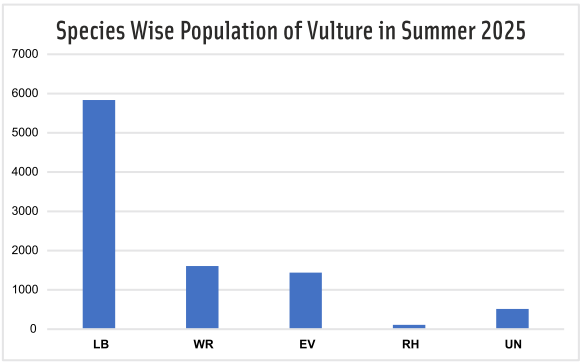

# अध्याय ६
# आवासीय दृष्टि से गिद्ध संख्या

## 6.1 मध्य प्रदेश में गिद्धों द्वारा आवास उपयोग

सर्वेक्षण में विभिन्न आवास प्रकारों में गिद्धों की आबादी दर्ज की गई, जिससे विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों में गिद्धों के वितरण का एक व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। आँकड़ों में गिद्धों के लिए सबसे पसंदीदा आवासों पर प्रकाश डाला गया है, जिनमें चट्टानें, पेड़, आहार स्थल, और जलाशयों के पास के क्षेत्र शामिल हैं, साथ ही कृषि और अन्य (खंभे, स्मारक और किले) क्षेत्र भी कुछ प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

चित्र 25. मध्य प्रदेश में गिद्ध द्वारा आवास उपयोग

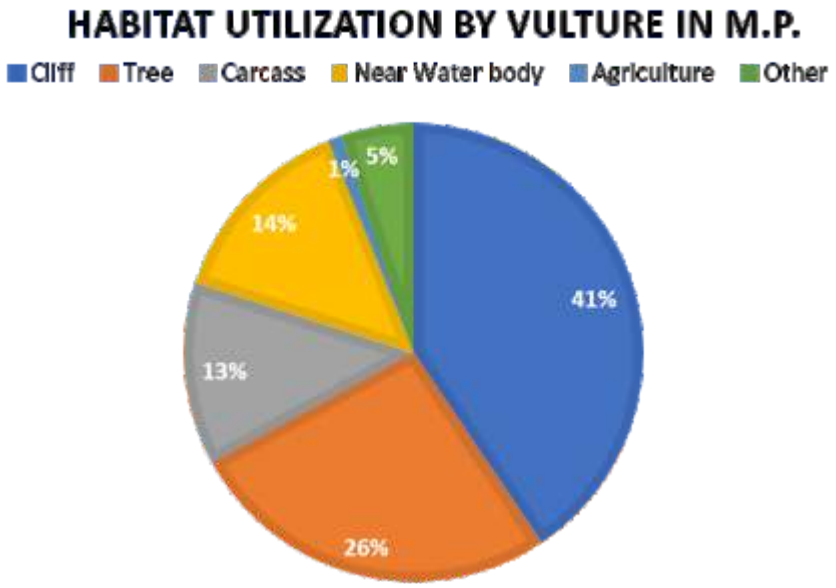

# अध्याय ७
# निष्कर्ष

गिद्ध प्रकृति के सबसे कुशल और पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण सफाईकर्मियों में से एक, गिद्धों के संरक्षण की दिशा में मध्य प्रदेश के चल रहे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी। सर्दियों और गर्मियों दोनों मौसमों में किए गए और सभी वनमंडलों और संरक्षित क्षेत्रों को शामिल करते हुए किए गए इस सर्वेक्षण से राज्य में गिद्ध प्रजातियों की वर्तमान स्थिति और वितरण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली है।

परिणाम उत्साहजनक हैं। 2016 से 2025 तक की नौ साल की अवधि में, मध्य प्रदेश में गिद्धों की कुल शीतकालीन आबादी 82% से अधिक बढ़कर 6,999 से 12,710 हो गई है। सभी प्रमुख निवासी प्रजातियों – लंबी चोंच वाले गिद्ध, सफेद पीठ वाले गिद्ध और सफ़ेद गिद्ध में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।

वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व, पन्ना टाइगर रिजर्व और रातापानी टाइगर रिजर्व जैसे कई संरक्षित क्षेत्र गिद्धों के गढ़ के रूप में उभरे हैं, जो गिद्धों की आबादी को बनाए रखने में आवास संरक्षण और भोजन की उपलब्धता के महत्व की पुष्टि करते हैं। हिमालयन और यूरेशियन ग्रिफ़ॉन जैसे मौसमी प्रवासियों की उपस्थिति राज्य के विविध परिदृश्यों के पारिस्थितिक महत्व को और बढ़ाती है।

हालाँकि, निष्कर्ष चिंता के क्षेत्र भी उठाते हैं। बैतूल, खंडवा, शून्य गिद्ध दृश्यों और पेंच टाइगर रिजर्व सहित कुछ क्षेत्रों में न्यूनतम आबादी की सूचना दी गई है जो संभावित खतरों या घोंसले के ढांचे की कमी का संकेत देती है। लाल सिर वाले गिद्धों की गंभीर रूप से कम आबादी और घोंसले की संख्या विशेष रूप से चिंताजनक बनी हुई है और लक्षित संरक्षण प्रयासों की मांग करती है।

मध्य प्रदेश जैसे विशाल और पारिस्थितिक रूप से विविध राज्य में गिद्धों की एक स्वस्थ आबादी की उपस्थिति एक सकारात्मक संकेत है, लेकिन यह सभी हितधारकों पर दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी भी डालती है।

इस आकलन अभ्यास ने न केवल प्रजाति–वार और क्षेत्र–वार संख्या के आंकड़ों के लिए एक अद्यतन आधार रेखा प्रदान की है, बल्कि महत्वपूर्ण अंतराल और संरक्षण प्राथमिकताओं की भी पहचान की है। निरंतर निगरानी, हानिकारक पशु चिकित्सा दवाओं के कड़े नियमन, कम घनत्व वाले क्षेत्रों में आवास बहाली और सामुदायिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करते हैं। मध्य प्रदेश, अपनी संख्या के आकार और प्रजनन आवासों के आधार पर, भारत की गिद्ध संरक्षण रणनीति में एक केंद्रीय भूमिका रखता है। निरंतर नीतिगत समर्थन, वैज्ञानिक निगरानी और जमीनी स्तर पर कार्रवाई के साथ, राज्य भारत के गिद्धों के भविष्य की सुरक्षा में एक उत्कृष्ट क्षेत्र के रूप में उभर सकता है।

## सुझाव

- ज्ञात गिद्धों के घोंसले और बसेरा स्थलों, विशेष रूप से वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिज़र्व, पन्ना टाइगर रिज़र्व और रातापानी टाइगर रिज़र्व जैसे उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों के संरक्षण पर तत्काल ध्यान दिया जाना चाहिए।
- संरक्षित और गैर–संरक्षित क्षेत्रों में, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मृत पशुओं का निपटान इस तरह से किया जाए कि गिद्धों को कोई नुकसान न हो, और इसमें हानिकारक पशु चिकित्सा दवाओं का कोई प्रभाव न हो।
- स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से गिद्धों के घोंसले स्थलों के निकट रहने वाले समुदायों को जागरूकता अभियानों के माध्यम से शामिल किया जाना चाहिए। घोंसले के संरक्षण और शव (मवेशी) प्रबंधन में पंचायतों और युवा समूहों को शामिल करके संरक्षण के लिए जमीनी स्तर पर समर्थन जुटाया जा सकता है।
- गिद्धों के आवासों के पास बिजली की लाइनें टकराव का जोखिम पैदा करती हैं और जहाँ आवश्यक हो, उनकी पहचान की जानी चाहिए, उन्हें चिह्नित किया जाना चाहिए या उनका मार्ग बदला जाना चाहिए। वन कर्मचारियों को ऐसे खतरों की नियमित निगरानी करनी चाहिए और निवारक उपाय करने चाहिए।
- गिद्ध संरक्षण रणनीतियों को संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन योजनाओं और राज्य जैव विविधता रणनीतियों कार्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए।

# अनुलग्नक 1

## वनमंडलवार गिद्ध संख्या (शीतकालीन गणना) 2025

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | उत्तर बालाघाट | 16 |
| 2 | दक्षिण बालाघाट | 0 |
| 3 | उत्तर बैतूल | 0 |
| 4 | दक्षिण बैतूल | 0 |
| 5 | पश्चिम बैतूल | 0 |
| 6 | भोपाल | 181 |
| 7 | रायसेन | 951 |
| 8 | ओबेदुल्लागंज /रातापानी टाइगर रिज़र्व | 549 |
| 9 | सीहोर | 205 |
| 10 | विदिशा | 505 |
| 11 | राजगढ़ | 20 |
| 12 | छतरपुर | 252 |
| 13 | टीकमगढ़ | 19 |
| 14 | उत्तर पन्ना | 362 |
| 15 | दक्षिण पन्ना | 701 |
| 16 | पन्ना टाइगर रिज़र्व | 691 |
| 17 | पूर्व छिंदवाड़ा | 49 |
| 18 | पश्चिम छिंदवाड़ा | 37 |
| 19 | दक्षिण छिंदवाड़ा | 0 |
| 20 | ग्वालियर | 287 |
| 21 | मुरैना | 73 |
| 22 | दतिया | 87 |
| 23 | श्योपुर | 109 |
| 24 | भिंड | 3 |
| 25 | कुनो राष्ट्रीय उद्यान | 106 |
| 26 | नर्मदापुरम् | 0 |
| 27 | हरदा | 0 |
| 28 | सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व | 202 |
| 29 | इंदौर | 29 |
| 30 | धार | 2 |
| 31 | झाबुआ | 0 |
| 32 | अलीराजपुर | 0 |
| 33 | जबलपुर | 66 |
| 34 | कटनी | 215 |
| 35 | पूर्व मंडला | 73 |
| 36 | पश्चिम मंडला | 4 |
| 37 | डिंडोरी | 83 |

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 38 | कान्हा टाइगर रिज़र्व | 259 |
| 39 | खंडवा | 0 |
| 40 | बुरहानपुर | 0 |
| 41 | खरगोन | 0 |
| 42 | बड़वाह | 0 |
| 43 | बड़वानी | 0 |
| 44 | सेंधवा | 0 |
| 45 | रीवा | 456 |
| 46 | सतना | 1221 |
| 47 | सिंगरौली | 7 |
| 48 | सीधी | 31 |
| 49 | संजय टाइगर रिज़र्व | 212 |
| 50 | दक्षिण सागर | 90 |
| 51 | उत्तर सागर | 285 |
| 52 | दमोह | 146 |
| 53 | वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व | 817 |
| 54 | उत्तर सिवनी | 175 |
| 55 | दक्षिण सिवनी | 0 |
| 56 | नरसिंहपुर | 6 |
| 57 | पेंच टाइगर रिज़र्व | 13 |
| 58 | बरघाट परियोजना सिवनी | 165 |
| 59 | उमरिया | 59 |
| 60 | अनुपपुर | 426 |
| 61 | उत्तर शहडोल | 104 |
| 62 | दक्षिण शहडोल | 79 |
| 63 | बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व | 305 |
| 64 | शिवपुरी | 168 |
| 65 | गुना | 91 |
| 66 | अशोकनगर | 41 |
| 67 | माधव टाइगर रिज़र्व | 53 |
| 68 | उज्जैन | 0 |
| 69 | शाजापुर | 4 |
| 70 | रतलाम | 0 |
| 71 | मंदसौर | 992 |
| 72 | नीमच | 578 |
| 73 | देवास | 50 |
| | कुल योग | 12710 |

# अनुलग्नक 2

## वृत्तवार गिद्ध संख्या (शीतकालीन गणना) 2025

| क्रम संख्या | वनवृत्त का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | बैतूल | 0 |
| 2 | खंडवा | 0 |
| 3 | बालाघाट | 16 |
| 4 | इंदौर | 31 |
| 5 | छिंदवाड़ा | 86 |
| 6 | नर्मदापुरम | 202 |
| 7 | शिवपुरी | 353 |
| 8 | सिवनी | 359 |
| 9 | ग्वालियर | 665 |
| 10 | जबलपुर | 700 |
| 11 | शहडोल | 973 |
| 12 | सागर | 1338 |
| 13 | उज्जैन | 1624 |
| 14 | रीवा | 1927 |
| 15 | छतरपुर | 2025 |
| 16 | भोपाल | 2411 |
| | **कुल** | **12710** |

# अनुलग्नक 3

## वनमण्डलवार गिद्धों की संख्या (ग्रीष्मकालीन गणना) 2025

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | उत्तर बालाघाट | 0 |
| 2 | दक्षिण बालाघाट | 0 |
| 3 | उत्तर बैतूल | 0 |
| 4 | दक्षिण बैतूल | 0 |
| 5 | पश्चिम बैतूल | 0 |
| 6 | भोपाल | 0 |
| 7 | रायसेन | 292 |
| 8 | ओबेदुल्लागंज /रातापानी टाइगर रिज़र्व | 425 |
| 9 | सीहोर | 123 |
| 10 | विदिशा | 322 |
| 11 | राजगढ़ | 17 |
| 12 | छतरपुर | 209 |
| 13 | टीकमगढ़ | 0 |
| 14 | उत्तर पन्ना | 326 |
| 15 | दक्षिण पन्ना | 575 |
| 16 | पन्ना टाइगर रिज़र्व | 731 |
| 17 | पूर्व छिंदवाड़ा | 90 |
| 18 | पश्चिम छिंदवाड़ा | 51 |
| 19 | दक्षिण छिंदवाड़ा | 0 |
| 20 | ग्वालियर | 217 |
| 21 | मुरैना | 0 |
| 22 | दतिया | 71 |
| 23 | श्योपुर | 51 |
| 24 | भिंड | 6 |
| 25 | कुनो राष्ट्रीय उद्यान | 229 |
| 26 | नर्मदापुरम् | 0 |
| 27 | हरदा | 0 |
| 28 | सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व | 253 |
| 29 | इंदौर | 18 |
| 30 | धार | 2 |
| 31 | झाबुआ | 0 |
| 32 | अलीराजपुर | 0 |
| 33 | जबलपुर | 0 |
| 34 | कटनी | 401 |
| 35 | पूर्व मंडला | 42 |
| 36 | पश्चिम मंडला | 2 |
| 37 | डिंडोरी | 0 |

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 38 | कान्हा टाइगर रिज़र्व | 266 |
| 39 | खंडवा | 0 |
| 40 | बुरहानपुर | 0 |
| 41 | खरगोन | 0 |
| 42 | बड़वाह | 0 |
| 43 | बड़वानी | 0 |
| 44 | सेंधवा | 0 |
| 45 | रीवा | 303 |
| 46 | सतना | 1026 |
| 47 | सिंगरौली | 5 |
| 48 | सीधी | 36 |
| 49 | संजय टाइगर रिज़र्व | 168 |
| 50 | मैहर | 214 |
| 51 | दक्षिण सागर | 71 |
| 52 | उत्तर सागर | 194 |
| 53 | दमोह | 33 |
| 54 | वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व | 870 |
| 55 | उत्तर सिवनी | 22 |
| 56 | दक्षिण सिवनी | 0 |
| 57 | नरसिंहपुर | 5 |
| 58 | पेंच टाइगर रिज़र्व | 24 |
| 59 | बरघाट परियोजना सिवनी | 22 |
| 60 | उमरिया | 72 |
| 61 | अनुपपुर | 308 |
| 62 | उत्तर शहडोल | 0 |
| 63 | दक्षिण शहडोल | 47 |
| 64 | बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व | 246 |
| 65 | शिवपुरी | 140 |
| 66 | गुना | 43 |
| 67 | अशोकनगर | 0 |
| 68 | माधव टाइगर रिज़र्व | 14 |
| 69 | उज्जैन | 0 |
| 70 | शाजापुर | 0 |
| 71 | रतलाम | 0 |
| 72 | मंदसौर | 517 |
| 73 | नीमच | 343 |
| 74 | देवास | 67 |
| | कुल योग | 9509 |

# अनुलग्नक 4

## वृत्तवार गिद्ध संख्या (ग्रीष्मकालीन गणना) 2025

| क्रम संख्या | वनवृत्त का नाम | गिद्धों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | बैतूल | 0 |
| 2 | खंडवा | 0 |
| 3 | बालाघाट | 0 |
| 4 | इंदौर | 20 |
| 5 | छिंदवाड़ा | 141 |
| 6 | नर्मदापुरम | 253 |
| 7 | शिवपुरी | 197 |
| 8 | सिवनी | 73 |
| 9 | ग्वालियर | 574 |
| 10 | जबलपुर | 711 |
| 11 | शहडोल | 673 |
| 12 | सागर | 1168 |
| 13 | उज्जैन | 927 |
| 14 | रीवा | 1752 |
| 15 | छतरपुर | 1841 |
| 16 | भोपाल | 1179 |
| | **कुल** | **9509** |

# अनुलग्नक 5

## 2021 से 2025 तक वनमंडलवार गिद्धों की संख्या (शीतकालीन गणना)

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | 2021 | 2021 | 2021 |
|---|---|---|---|---|
| 1 | उत्तर बालाघाट | 0 | 0 | 16 |
| 2 | दक्षिण बालाघाट | 0 | 0 | 0 |
| 3 | उत्तर बैतूल | 0 | 0 | 0 |
| 4 | दक्षिण बैतूल | 0 | 0 | 0 |
| 5 | पश्चिम बैतूल | 0 | 0 | 0 |
| 6 | भोपाल | 180 | 43 | 181 |
| 7 | रायसेन | 315 | 340 | 951 |
| 8 | ओबेदुल्लागंज /रातापानी टाइगर रिज़र्व | 205 | 418 | 549 |
| 9 | सीहोर | 125 | 135 | 205 |
| 10 | विदिशा | 266 | 143 | 505 |
| 11 | राजगढ़ | 12 | 2 | 20 |
| 12 | छतरपुर | 441 | 202 | 252 |
| 13 | टीकमगढ़ | 71 | 16 | 19 |
| 14 | उत्तर पन्ना | 438 | 369 | 362 |
| 15 | दक्षिण पन्ना | 614 | 648 | 701 |
| 16 | पन्ना टाइगर रिज़र्व | 722 | 935 | 691 |
| 17 | पूर्व छिंदवाड़ा | 63 | 49 | 49 |
| 18 | पश्चिम छिंदवाड़ा | 50 | 40 | 37 |
| 19 | दक्षिण छिंदवाड़ा | 0 | 0 | 0 |
| 20 | ग्वालियर | 162 | 337 | 287 |
| 21 | मुरैना | 114 | 104 | 73 |
| 22 | दतिया | 41 | 48 | 87 |
| 23 | श्योपुर | 350 | 108 | 109 |
| 24 | भिंड | 17 | 12 | 3 |
| 25 | कुनो राष्ट्रीय उद्यान | 381 | 505 | 106 |
| 26 | नर्मदापुरम् | 0 | 0 | 0 |
| 27 | हरदा | 0 | 0 | 0 |
| 28 | सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व | 144 | 198 | 202 |
| 29 | इंदौर | 117 | 32 | 29 |
| 30 | धार | 0 | 0 | 2 |
| 31 | झाबुआ | 0 | 0 | 0 |
| 32 | अलीराजपुर | 0 | 0 | 0 |
| 33 | जबलपुर | 92 | 89 | 66 |
| 34 | कटनी | 64 | 151 | 215 |
| 35 | पूर्व मंडला | 72 | 0 | 73 |
| 36 | पश्चिम मंडला | 18 | 22 | 4 |
| 37 | डिंडोरी | 68 | 0 | 83 |

| क्रम संख्या | वनमंडल का नाम | 2021 | 2024 | 2025 |
|---|---|---|---|---|
| 38 | कान्हा टाइगर रिज़र्व | 98 | 172 | 259 |
| 39 | खंडवा | 0 | 0 | 0 |
| 40 | बुरहानपुर | 0 | 0 | 0 |
| 41 | खरगोन | 0 | 0 | 0 |
| 42 | बड़वाह | 0 | 0 | 0 |
| 43 | बड़वानी | 0 | 0 | 0 |
| 44 | सेंधवा | 0 | 0 | 0 |
| 45 | रीवा | 345 | 648 | 456 |
| 46 | सतना | 474 | 1200 | 1221 |
| 47 | सिंगरौली | 0 | 0 | 7 |
| 48 | सीधी | 75 | 21 | 31 |
| 49 | संजय टाइगर रिज़र्व | 188 | 220 | 212 |
| 50 | दक्षिण सागर | 115 | 136 | 90 |
| 51 | उत्तर सागर | 50 | 210 | 285 |
| 52 | दमोह | 194 | 328 | 146 |
| 53 | वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व | 300 | 592 | 817 |
| 54 | उत्तर सिवनी | 164 | 191 | 175 |
| 55 | दक्षिण सिवनी | 0 | 0 | 0 |
| 56 | नरसिंहपुर | 3 | 7 | 6 |
| 57 | पेंच टाइगर रिज़र्व | 26 | 38 | 13 |
| 58 | बरघाट परियोजना सिवनी | 2 | 61 | 165 |
| 59 | उमरिया | 40 | 42 | 59 |
| 60 | अनुपपुर | 278 | 241 | 426 |
| 61 | उत्तर शहडोल | 68 | 98 | 104 |
| 62 | दक्षिण शहडोल | 50 | 63 | 79 |
| 63 | बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व | 172 | 197 | 305 |
| 64 | शिवपुरी | 148 | 133 | 168 |
| 65 | गुना | 85 | 32 | 91 |
| 66 | अशोकनगर | 17 | 0 | 41 |
| 67 | माधव टाइगर रिज़र्व | 194 | 82 | 53 |
| 68 | उज्जैन | 0 | 0 | 0 |
| 69 | शाजापुर | 0 | 13 | 4 |
| 70 | रतलाम | 0 | 0 | 0 |
| 71 | मंदसौर | 675 | 704 | 992 |
| 72 | नीमच | 543 | 160 | 578 |
| 73 | देवास | 0 | 10 | 50 |
| | कुल योग | 9446 | 10845 | 12710 |

# अनुलग्नक 6

गिद्धों के घोसले

# अनुलग्नक 7

**गिद्ध आबादी के लिए खतरा**

**भोजन प्रतियोगिता**

Van Vihar National Park & Zoo, Bhopal

CONCEPT ORANGE